

रश्क के गुहर

रश्क के गुहर



मोती बी. ए.

मोती बी. ए.



रश्के गुहर

रचनाकाल 1944-1972





प्रकाशक

सम्पदा न्यूज

© मोती लाल वेलफेयर सेवा ट्रस्ट, बरहज

देवरिया, उ.प्र.

द्वितीय संस्करण-2020



Email-

anjanikumarupadhyaya@gmail.com

editorsampadanews@gmail.com

Website-

www.sampadanews24.blogspot.com





समर्पण



'बेनजर बन के रह जाने वाले'
डॉ एस एम एकबाल
'रश्क के गुहर' का नजराना
तुम्हीं कबूल करो

मोती बी ए





जिन्दगी की हसीं राह में रह गुजर बन के हम रह गये
मंजिले कारवाँ जब चला हमसफर बन के हम रह गये
उनके चौखट के सिजदे किये, दोनों थे हाथ फैले हुए
इल्लिजा बन्द आँखों से की, बेनजर बन के हम रह गये
जिन्दगी वक्फ मैंने जो की क्या अजब उनकी कारीगरी
हौसले दिल के दिल में रहे बेहुनर बन के हम रह गये

-डाक्टर यस.यम. एकबाल





कीमते गुहर

इल्म शम्सियत के लेबास में नाचीज नजर आता है। लेबास इल्म की शराफत का एक जरूरी तकाजा ही नहीं, बल्कि जिस्म में आने की उसकी एक हसीन मजबूरी भी है। मगर हैरत अंगेज बात यह है कि लोग लेबास की तड़क-भड़क से ज्यादा गुतासिर होते हैं और लेबास के अन्दर गुमशुदा इल्म पर कम गौर करते हैं। लेहाजा, इल्म नाचीज और लेबास एक चीज नजर आने लगता है। तहजीब और तमद्दुम के नाम पर 'फर्मिलिटी' का दौर चलने लगता है। इसी 'फर्मिलिटी' को हम हकीकी और मिजाजी मान बैठते हैं और इल्म से बाइतमिनान दूर-दूर बने रहते हैं। इतना ही नहीं, अगर इल्म अपने लेबास से उरियाँ होकर जाहिर होने की कोशिश करता है तो हम आसानी से उसको उसके लेबास से हमेशा के लिए अलग कर देते हैं। चुनांचे इल्म हयादार जिस्मानी सूरतों से मुँह मोड़कर कुदरती शौक का दामन पकड़ लेता है और हम उसका लेबास लेकर मातम मनाते फिरते हैं। हमें अपने किये पर रंज होता है, मगर सिवा पछताने के कुछ हाथ नहीं लगता। कितना अच्छा होता, हम शुरू से ही उस इल्मयाफता अजीम से वाक्फियत रखते और उसके लेबास को शाने करीम समझकर सिजदा करते, अदब करते, इज्जत बख्शते ! साफ जाहिर है कि-

खुदा की दी हुयी यह जिन्दगी नियामत है
जिस्म भी अपना नहीं उसकी ही अमानत है
रुह की शक्ल में वह भी इसी में रहता है
जिन्दगी रो के बिताये तो उसे लानत है

हिन्दोस्तान की आबो हवा मातदिल है। न गर्म ज्यादा, न ज्यादा सर्द। बाबर के सैनिकों को जंग में फतहयाब होने के बाद यहाँ की आबो-हवा पसन्द नहीं आई। बाबर दूरन्देश शख्स था। इसी आबो-हवा की सरजमीं से शाहंशाह मुगल-ए-आजम अकबर इंसान और इंसानियत की आवाज बुलन्द करने वाला शायरे अजीम कबीर, अब्दुरहीम खानखाना, मलिक मुहम्मद जायसी, रसखान, आलिम फाजिल दाराशिकोह, बहादुरशाह 'जफर' जैसे बेशकीमती नगीने और जवाहरात पैदा हुए, जिन्होंने इस बतन की इबादत की और डॉक्टर एकबाल की कुछ इस कदर हौसला अफजाई की कि उन्होंने अपनी शायरी में हिन्दोस्तान को 'सारे जहाँ से अच्छा' ऐलान किया। मेहरबान जरा गौर फरमाएँ-

भारतमाता की गोदी में कितने परदेसी सुख पाये
अपने बच्चों जैसे माँ ने सबके ही सुख-दुख अपनाए
वह माता, दुनिया की माता दिन काट रही हैरानी के





चक्कर में पड़ी हुई है माँ शैतानों की शैतानी के
अब एक और झटके से ही आखिरी बन्द भी टूटेगा
बस एक और ठोकर से ही यह घड़ा पाप का फूटेगा
दुनिया में अमन-चैन फैले
घर-घर में सुख के दिये जलें
हम वह दिन फिर से लाएंगे
हम आगे बढ़ते जाएंगे
जब तक हम में है दम में दम
एक और कदम
आखिरी कदम

हमारे घर का पुराना माहौल उर्दू का था। हमारे पिताजी श्रीमान् पण्डित राधाकृष्ण उपाध्याय उर्दूदां थे। उन्होंने खुद मुझको उर्दू की पहली किताब पढ़ायी थी। अपने हाथ से मेरी कलम पकड़ कर उन्होंने मुर्गी के अण्डे जैसे ऐन और गैन लिखना सिखाया था। मगर जिन्दगी के जद्दोजहद में आगे चलकर कुछ इस कदर मजबूर हुआ कि पढ़ाई-लिखाई का सिलसिला बिगड़ गया और फकत उर्दूदां दोस्तों की सोहबत का सहारा रह गया। सन् 1944 से सन् 1946 तक लाहौर में पंचोली आर्ट पिक्चर्स में बहैसियत गीतकार के रहा। यहाँ से बम्बई के फिल्म बाजार में सैर की। फिल्मों का उर्दू माहौल मुझ पर ज्यादा तारी हुआ और यहाँ मैंने कुछ गजल व कौबालियाँ लिखीं। जनाब यस्. एच. मंटो साहब मरहूम, राजा मेहदी अली खाँ, नाजिम पानीपत, नजम नकवी, दिलीप कुमार जैसी हस्ताइ इश्तियाक की सोहबत में लुत्फोन्दोज होने का फख्र हासिल हुआ। 'साजन' फिल्म की गजल 'हमको तुम्हारा ही आसरा' 'तुम हमारे हो न हो' औ फिल्म 'नदिया के पार' की कौबाली 'वह जिन्दगी है इसलिए कि' इसी माहौल की बगशीश है। एक बड़ी नज्म 'एक शायर' 'तमन्ना कौन करे' और 'अलविदा' की वजह यही माहौल है।

बम्बई से लौट कर आने पर जनाब बेखुद रजवी 'खामोश' गाजीपुरी, बेकल 'उत्साही' जैसे हमजोलियों से रक्त-जक्त बड़ी और मुशायरे, कवि सम्मेलनों के दौर से गुजरते हुए उर्दूबी तौर-तरीकों से जजबात जाहिर करने के हौसले बुलन्द होते गए जिसका अंजाम 'रश्क-गुहर' आपके खिदमत में हाजिर है।

बीस-बाइस वर्ष की अपनी बरहज की जिन्दगी में उर्दू टीचर जनाब धरंराज उपाध्याय साहब, डॉ यासीन मुहम्मद और डॉ महीउद्दीन साहब ने मेरी हिम्मत आफजाई की। उन्होंने मेरे हौसलों को और अदबी नजरिये को पस्त होने से बचा लिया। मैं इन हजरात का तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूँ। वक्तन फवक्तन जिले के अपने स्कूली महकमें के आला अफसरान से मुलाकातें होती रहीं। उनसे भी बहुत-कुछ रोशनी मिली है। उनका मैं





बहुत मशकूर हूँ। ऐसी अजीम हस्तियों में डी. आई. ओ. एस जनाब जाफरी साहब आजमगढ़ के प्रिन्सिपल जनाब अकबर सुल्तान साहब, ओ. के. इण्टर कॉलेज, लार के प्रिन्सिपल साहब और अतरौला इण्टर कॉलेज के प्रिन्सिपल साहब, नार्मल स्कूल बरहज के प्रिन्सिपल जनाब हन्नान साहब की हौसला अफजाई का जिक्र मेरी तर्जब्यानी की गैर मामूली औकात के बाहर की चीज है। मैं आप सब हजरात की दुआओं का मुन्तजिर हूँ। आपकी दुआएँ हासिल करने का इंसानी और एखलाकी हक मुझे हासिल है। मैं आप सभी के चरणों में अपना सिर झुकाता हूँ। 'रश्के गुहर' के किन्हीं पन्नों में एक शेर स्याह है-

शायरी सबको इल्मयाफता बनाती है
इल्म से दूर है वह, इल्म से न आती है

शायरी से मेरा ताल्लुक कुछ इसी तौर-तरीके का है। यही जिन्दगी की वह हसीन राह है, जिस पर रहगुजर बनकर रह जाना जनाब डॉ. एस. एम. इकबाल साहब को भी पसन्द है और उन्हें जौके जज्बात खींचकर उस हद तक पहुँचा देता है कि उसकी इबादत की दौर में उनकी बन्द आँखें और दोनों फैले हाथ हमेशा के लिए कायमियत अख्तियार कर लेते हैं। वे बेनजर आया बेहुनर बन कर रह जाते हैं और इसी अन्दाज में उधर को जाने वाले कारवाँ के साथ लग जाते हैं। इस रहगुजर की रहबरी की खिदमत में रश्के गुहर का यह नजराना मैंने इसी कीदत से पेश किया है कि मुमकिन है कि इस नाचीज को उस इल्मयाफता अजीम की कदमबोशी का मौका मयस्सर हो जाये। इस रहगुजर पर मेरा दिली एतबार है।

चन्द लफ्ज 'रश्के गुहर' की जबान के सिलसिले में अर्ज करना मैं अपना फर्ज मानता हूँ। उर्दू अदब पर मेरा कोई इल्मी हक नहीं है। गलतियाँ और खामियाँ हरचन्द मुमकिन हैं, मगर वफादारी और हक अदायगी के मामलात में खामियाँ और गलतियाँ एक खास अन्दाज का खलुस लिए होती हैं, जो तर्ज-जिन्दगानी को एक खास किस्म का हुस्न, बाँकपन और नाजो-अदा अता करती हैं। यह एतहाद और मेल व मिलाप की जमीन है। मुस्तलिफ गलतियों से चलकर तहजीबो-तमहुम की हमशीरा गोशे तनहाई के मजे लूटती है और देर तक एक दूसरे के कानों में बातें करती रहती है। हिन्दी में एक कहावत है- 'घी का लड्डू टेढ़ो भलो' मेरी वफादारी और फरमावरदारी में आप यदि कोई कमी महसूस करें तो आपको अपना फैसला दौर अमल लाने का पूरा पूरा हक है।





आभार

श्री मोती बी.ए ने अपनी पुस्तक 'रश्क़े गुहर' का प्रथम प्रकाशन भोजपुरी संसद जगत गंज वाराणसी द्वारा कराया था। उस समय वह प्रेस सुविख्यात साहित्यकार शम्भू नाथ सिंह के भाई स्वामी नाथ सिंह चलवा रहे थे। बड़ी ही मोहक छवि थी पुस्तक की। पुस्तक ने अप्रतिम उपलब्धियाँ और सम्मान जन मानस में प्राप्त किया। उसके बाद इसका दूसरा संस्करण प्रकाशित नहीं हुआ। श्री मोती बी.ए ने एक बार इसका एक लघु संस्करण अजय प्रिन्टिंग प्रेस, बरहज द्वारा प्रकाशित करवाया लेकिन संक्षिप्त मात्रा में। इसमें सहयोग रहा श्री वीरेंद्र तिवारी, और उनके पुत्र डा. शैलेन्द्र त्रिपाठी, अरविन्द त्रिपाठी, अजय त्रिपाठी का। पुस्तकों के प्रकाशन में साहित्यकार डॉ. रामदेव शुक्ल द्वारा श्री मोती बी.ए ग्रन्थावली के 9 वें खण्ड में 'रश्क़े गुहर' का पुनः प्रकाशन किया था जिसमें श्री मोती बी.ए के बारे में लिखे कुछ कविताओं को जोड़ देने से मूल 'रश्क़े गुहर' से अलग हो गया। मूल 'रश्क़े गुहर' के कवर चित्र को उसमें सम्मिलित नहीं किया। शायद उस चित्र में श्री मोती बी.ए की भावना छपी हुयी थी।

मुझे मूल रूप से पुस्तक 'रश्क़े गुहर' मस्तिष्क को झकझोरती रहती थी। मैंने यह तय किया कि श्री मोती बी.ए की सभी पुस्तकें मूल रूप में नेट पर उपलब्ध करा दी जाय। इसके लिए ईश्वर ने कुछ लोगों के द्वारा प्रेरणाश्रोत और सहायक बनकर मदद के लिए उतार दिया। आज ये पुस्तक 'श्री मोती लाल वेल्फेयर सेवा ट्रस्ट' द्वारा सम्पदा न्यूज चैनल के वेबसाइट www.sampadanews24.blogspot.com के Urdu Books Of Moti BA नामक आप्सन पर उपलब्ध कराया जा रहा है।

'रश्क़े गुहर' को मैंने मूल रूप में प्रस्तुत कराने का प्रयास किया है जिसमें उसके कवर पृष्ठ को मूल रूप में (परिवर्तित रूप में कम्प्यूटराइज्ड कृत) प्रस्तुत है।

श्री मोती बी.ए ने बाद में सैकड़ों कविताएं लिखीं। वो अन्तिम समय तक लिखते रहे। लेखन से उनका साथ कभी नहीं छूटा। अन्तिम समय में उन्होंने अपने लेखन में सहायता भी लेने लगे। उनके प्रत्येक रचना को लिखने का काम पैजनी उपाध्याय 'लूना' और माण्डवी उपाध्याय 'पूना' ने पूरा किया। अब आज लूना जिसका नाम पैजनी पाण्डेय पत्नी रजनीश पाण्डेय एक वीरांगना के रूप में बालक के जान बचाने में शहीद हो गयी। पूना माण्डवी द्विवेदी पत्नी सत्येन्द्र द्विवेदी आज अपने सतकर्मों और श्री मोती बी.ए के आशीर्वाद से सभी सुखी है। इस कार्य के सम्पादक में स्व. लूना की विशेष योगदान रहा है जो आज दैवीय शक्ति के रूप में साथ है। पूना का भी इस कार्य में सहयोग और प्रेरणा रहता है।

इसके अतिरिक्त वेबसाइट के स्थायित्व के लिए हम उमाशंकर सिंह विसेन उर्फ उमेश सिंह, जिलाध्यक्ष, चेयरमैन संघ देवरिया, अध्यक्ष नगर पालिका परिषद गौरा बरहज, का आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त स्व. हंसनाथ सिंह, जीतेन्द्र भारत, का सहयोग रहा है।





ट्रस्ट के निर्माण में राकेश श्रीवास्तव सम्पादक सम्पदा, सूर्यनाथ सिंह, शिमान्ती देवी पत्नी सूर्यनाथ सिंह, बी.के.सर, मीनी उपाध्याय, वर्तिका उपाध्याय का योगदान सर्वोपरि है।

इन सभी साधनों के अनुकूल होने पर हम आभारी हैं उन लोगों के जिनके सहयोग से यह पुस्तकें आज उपलब्ध होने के लिए तैयार हैं। इसमें सम्पदा परिवार देवेन्द्र द्विवेदी, राकेश श्रीवास्तव, मोनिका त्यागी राणा, अरविन्द त्रिपाठी, डॉ. उमेश पाण्डेय के साथ विशेष सहायक मु. एहसान के तीन पुत्र रत्न फैजान, जिशान, अयान, का सहयोग सर्वोपरि है जिन्होंने अपने अथक प्रयास से इस कार्य को सफल अंजाम देने में पूर्ण सहायता की है।

अन्त में हम अपने प्रेरणाश्रोत और अपने स्नेह से ऊर्जा प्राप्त कर और आशीर्वाद से अपने लेखन से मार्गदर्शन करने वाले डॉ. अजय मिश्र, प्राचार्य, बाबा राघवदास भगवानदास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आश्रम बरहज का आभारी हूँ जिनके सहयोग से आत्मबल बना रहा। साथ ही हमारे बड़े भाई भालचंद्र उपाध्याय, जवाहरलाल उपाध्याय, शान्ति उपाध्याय, प्रमिला उपाध्याय, गुंजन उपाध्याय इत्यादि घर के सदस्य एवं श्री मोती बी.ए. के शुभचिन्तकों का विशेष आभारी हूँ जिन्होंने इस नेक कार्य में जहां तक हो सके मेरी सहायता की है।

अंजनी कुमार उपाध्याय

पुत्र-श्री मोती बीए

सम्पादक-सम्पदा न्यूज चैनल

प्रबंधक-मोती लाल वेलफेयर सेवा ट्रस्ट

उपाध्यक्ष-मोती बीए वेलफेयर सोसाइटी, लक्ष्मी निवास

श्री मोती बीए मार्ग, नन्दना वार्ड पश्चिमी

बरहज, देवरिया, उ.प्र.

email-anjanikumarupadhyaya@gmail.com

editorsampadanews@gmail.com

website-www.sampadanews24.blogspot.com

01-08-2020





मोती बी ए

जन्मतिथि : 01 अगस्त 1919

पुण्यतिथि : 18 जनवरी 2009

जन्मस्थान : ग्राम-बरेजी, झाकघर-तेलिया कला, जिला-देवरिया (उ.प्र.)

निवास स्थान : लक्ष्मी निवास, नन्दना पश्चिम, बरहज, देवरिया (उ.प्र.)

परिवार : पिता- श्री राधाकृष्ण उपाध्याय, माता-श्रीमती कौशल्या देवी, सहोदर भ्राता- श्री जगदीश नारायण मालवीय, डॉ परमानन्द उपाध्याय, बहनें-सुश्री शान्ती देवी, कान्ती देवी, पत्नी- श्रीमती लक्ष्मी देवी उपाध्याय, पुत्र-जवाहर लाल उपाध्याय, भालचन्द्र उपाध्याय, अंजनी कुमार उपाध्याय, पुत्रियाँ- उर्मिला देवी, शारदा देवी।

शिक्षा एवं शैक्षणिक उपाधियाँ : बरहज से हाई स्कूल, गोरखपुर से इण्टर मीडिएट तथा वाराणसी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम. ए. (इतिहास), बी.टी. साहित्य स्न।

सर्जनात्मक लेखन : 1936 से 2000 तक हिन्दी, भोजपुरी, उर्दू तथा अंग्रेजी में गीत, गजल, कविता, निबन्ध, अनुवाद, आत्मकथ इत्यादि प्रकाशित / अप्रकाशित कुल मिलाकर पचास से अधिक रचनाएँ।

पत्राकारिता : 1939 से 1943 तक अग्रगामी, आज, संसार, आर्यावर्त समाचार पत्रों के सम्पादकीय विभाग में मूर्धन्य पत्राकार बाबूराव विष्णु पराङ्कर तथा सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी शचीन्द्रनाथ सान्याल के साथ सम्पादकीय विभाग में सहायक के रूप में कार्य।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी : 1943 में वाराणसी में चेतगंज थाना तथा सेण्ट्रल जेल में भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत नजरबन्द।

सिनेमा गीतकार एवं कलाकार : 1944 से लेकर 1951 तक पंचोली आर्ट्स पिक्चर्स, लाहौर, फिल्मिस्तान लिमिटेड, बम्बई, प्रकाश पिक्चर्स, बम्बई के गीतकार के रूप में 'नदिया के पार' (पुरानी, दिलीप कुमार, कामिनी कौशल), 'कैसे कहूँ', 'साजन', 'सिन्दूर', 'रिमझिम', 'सुभद्रा', 'चन्द्रलेखा', 'ममता', 'एक कदम', 'भक्त ध्रुव', 'हिप हिप हुर्रे उर्फ चौबे जी', 'इन्तजार के बाद', 'काफिला', 'किसी की याद', 'राजपूत', 'रामबाण', 'वीर घटोत्कच उर्फ सुरेखा हरन', 'रामी धोबन', 'निर्मल', 'अमर आशा', 'इन्द्रासन', इत्यादि अनेक फिल्मों में गीत लेखन।

फिल्म 'साजन' का प्रसिद्ध गीत 'हमको तुम्हारा ही आसरा, तुम हमारे हो न हो' तथा 'नदिया के पार' के सभी गीतों का भोजपुरी में सर्वप्रथम लेखन- 'कठवा के नइया बनइहे मलहवा', 'मोरे राजा हो, ले चल नदिया के पार' इत्यादि गीतों के द्वारा फिल्मों में भोजपुरी भाषा के प्रवर्तक। पुनः 1984-85 में भोजपुरी फिल्म 'गजब भइलें रामा' 'चम्पा चमेली', 'ठकुराइन' इत्यादि में गीत लेखन एवं अभिनय। कुल मिलाकर पचास से अधिक फिल्मों में गीत लेखन।





आकाशवाणी तथा दूरदर्शन : बम्बई, इलाहाबाद, लखनऊ, गोरखपुर से काव्य पाठ तथा अनेक स्वरचित लोक संगीतिकाओं का प्रसारण। अनेक कवि गोष्ठियों, कवि सम्मेलनों आयोजनों के माध्यम से काव्य पाठ एवं साहित्यिक रचनाओं का प्रचार प्रसार।

अध्यापन : 1952 से 1980 तक श्रीकृष्ण इण्टर कालेज, बरहज में इतिहास, अंग्रेजी एवं तर्क शास्त्र के प्रवक्ता के रूप में प्रतिष्ठित। वर्ष 1978 में उत्तर प्रदेश शासन(शिक्षा विभाग) द्वारा 'आदर्श अध्यापक' पुरस्कार से सम्मानित। अध्यापन काल में विद्यार्थियों के लाभार्थ हाई स्कूल/ जूनियर हाई स्कूल पौडरी तथा अन्य अंग्रेजी कविताओं का हिन्दी में पद्यानुवाद।



साहित्यिक रचनाएँ : हिन्दी कविता में तेइस प्रकाशित तथा सात अप्रकाशित कविता पुस्तकें, हिन्दी गद्य में 'इतिहास का दर्द', निबन्ध एवं आत्मकथ का लेखन, भोजपुरी में पाँच प्रकाशित एवं दो अप्रकाशित पुस्तकें। उर्दू में पाँच प्रकाशित तथा एक अप्रकाशित पुस्तक, अंग्रेजी में दो प्रकाशित तथा एक अप्रकाशित कविता पुस्तक तथा अंग्रेजी में शेक्सपीयर के सानेट्स तथा पाँच अन्य लम्बी अंग्रेजी कविताओं तथा कई अन्य छोटी अंग्रेजी कविताओं का हिन्दी एवं भोजपुरी में पद्यानुवाद। अब्राहम लिंकन (अंग्रेजी नाटक) का भोजपुरी में अनुवाद, कालिदास कृत 'मेघदूत' (संस्कृत) का भोजपुरी में पद्यानुवाद। इस प्रकार पचास से अधिक पुस्तकों का लेखन और अनुवाद। मोती बी ए ग्रन्थावली में सम्मिलित पुस्तकों के अतिरिक्त कुछ अन्य अप्रकाशित निबन्ध एवं कविताएँ अभी छपने के लिए शेष। भोजपुरी में सानेट एवं हाइकू विधा में लिखने वाले सर्वप्रथम रचनाकार।

सम्मान एवं पुरस्कार : दो दर्जन से अधिक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त, जिसमें से कुछ प्रमुख हैं- उत्तर प्रदेश शासन द्वारा 'समिधा' पुस्तक के लिए राज्य साहित्यिक पुरस्कार (1973-74), उत्तर प्रदेश राज्य सरकार द्वारा 'आदर्श अध्यापक' पुरस्कार (1978), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार (1984), हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा 'भोजपुरी स्त' उपाधि (1992), 'श्रुतिकीर्ति' सम्मान (1997), विश्व भोजपुरी सम्मेलन, भोपाल द्वारा 'सेतु' सम्मान (1998), साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा भोजपुरी के लिए प्रथम 'भाषा सम्मान' (2001-02), 'किसलय' सम्मान (2005), 'सरयूरल' सम्मान (2005)।

अकादमिक/साहित्यिक स्वीकृति, अभिमत एवं मान्यताएँ : देश-विदेश की अनेक लब्ध प्रतिष्ठ पत्रिकाओं में परिचय एवं रचनाएँ प्रकाशित। विभिन्न प्रयोजनों हेतु सम्पादित अनेक पुस्तकों में रचनाएँ सम्मिलित एवं प्रकाशित। कई विश्वविद्यालयों के भोजपुरी लोक साहित्य विषयक पाठ्यक्रम में रचनाएँ सम्मिलित। विश्वविद्यालयों में मोती बी ए के साहित्य पर पी. एच.डी. उपाधि हेतु कई शोध प्रबन्ध स्वीकृत।





नजरे अकीदत

मैं जनाब मोती बीए के नाम से पहले से वाकिफ था। मगर उनको देखने का इससे पहले कभी मौका न मिला। मैं यह सोचता था कि ख्वाब कब शरमिन्दा तामीर होता है। खुदा का शुक्र है कि बरहज नार्मल स्कूल में तक्रुरी के सिलसिले में मुश्तकिल कायम का मौका मयस्सर हुआ और इस शायर को करीब से देखने की बरसों की तमन्ना पूरी हुई। बरहज जैसे अदबी रेगिस्तान में जनाब मोती बीए नखलिस्तान का मुकाम रखते हैं।

आप की शख्सियत में बला की जाविस्त है। आप मुजस्सम शेर मालूम होते हैं। आप का चेहरा जख्मी दिलों के लिये मरहम है। आप को देखकर ऐसा मालूम होता है कि जिन्दगी के कारजार में हर मोहाज पर लड़ने के लिये तैयार हों। जिन्दगी आप को बहुत अजीज है और इसका हर लमहा कैफ आगी है।

आपकी शायरी मौशीकियत से पुर है। हर शेर तारे हयात को छेड़ देता है। शेली की जुबान में आपके सबसे मीठे नग्में वह हैं जो गम की तर्जुमानी करते हैं। आपकी शायरी में पैगामे अमल है, उम्मीद की झलक है और शिक्स्ता दिलों के लिए आसुदगी है। आपने मामूली मौजूअ पर कलम उठाया है मगर आपकी कूबते मतखैयुल्ला ने उसको अदबी साहकार बना दिया है। असगर मरहूम ने कहा था कि मुझे शेर कहने में उतनी ही तकलीफ होती है जितनी कि औरत को बच्चा जनने में। कुछ ऐसी ही बात इस शायर के साथ भी है। वह जब शेर कहने पर मजबूर हो जाता है तब ही कहता है। इसलिए अमन के यहाँ आमद है, आवर नहीं है।

मुझे इस बात का एतराफ है कि मैं जनाब मोती बीए के कलाम को कमा हक्कहू न समझ सका; फिर भी उनके कुछ अशयार ने मेरे ऊपर गैरफानी नकूश छोड़े हैं और उनको अपने खाली वक्तों में गुन गुनाकर बुझे हुए दिल में हरात महसूस करता हूँ। ये चन्द सतरे बतौर नजरे अकीदत पेश हैं।

अब्दुल हन्नान

हेडमास्टर गवर्नमेण्ट स्कूल

बरहज, जिला देवरिया

बरहज 31-8-72





मोती बीए रन्जो कनायत के आइने में (खलीकुज्जमा सिद्दीकी)

उस पैदा करने वाले खुदाये पाक का शुक्र व एहसान है जो अपनी रहमत बेपाया से हर दौर में उर्दू शायरी में एक न एक खुदाये सुखन पैदा करता रहा। कभी मीर, तो कभी गालिब, कभी हाली और एकबाल, कभी दाग तो ज़िगर, कभी फानी तो कभी फिराक अलग अलग शकल से दुनिया में तशरीफ़ फर्मा करते रहे। उर्दू शायर अबसर उर्दू शायरी पर ही हक रखते देखे गये हैं लेकिन आज के हिन्दुस्तान में ऐसे भी शोअरा हैं जो सिर्फ उर्दू ही पर नहीं बल्कि और जवानों पर भी कुदस्त रखते हैं। बेकल उत्साही का 'कृष्ण माखन चोर', 'या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहु पुर को तजि डारों' वाले रसखान साहब को रुबरु सामने ला खड़ा कर देता है और हमारे बेकल साहब हूबहू रसखान के रूप में नजर आने लगते हैं। बेकल उर्दू शायरी में अजीम जगह रखते हैं लेकिन उन्होंने हिन्दी में मन मयूर को नचा देने वाली चीजें जमाने हाल को मयस्सर की हैं।

हमारे मन बहक शायर जनाब मोती बीए ने ठीक वही कर दिखाया है जो ऊपर हम अभी स्याह कर आये हैं। बतौर नमूने के हम जनाब मोती बीए की शायरी से चन्द कता मुस्तलिफ़ कल्चरों के पेश करते हैं-

तुम तख़ैयुल में जो आ जावोगे उरियां हो के
शीशाए चश्म तड़ाके से टूट जायेंगे
एक नयी दीद से देखेंगे तुम्हारा जलवा
औ' उसी दम तेरे जज्बे में डूब जायेंगे

(रश्क के गुहर)

मुकरायें हंसे ओस कण
बैठकर फूल की गोद में
खेल खेलें किरन औ' पवन
मैं निहारा करूँ मोद में

(मोती के मुक्ताक)

स्नेह भरल रहे, पोढ़ बतिहर रहे
खूब दीया के छाती फुलाइल रहे
पीर से हीर जबले ना जरे लगे
तबले पियवा अन्हारें लुकाइल रहें

(सेमर के फूल)





डेफ्थ दाई लव डियर, दाई ब्यूटी हाइट
मेर दि डेफ्थ, दाई ब्यूटी मोर एण्ड मोर रियेलाइज्ड
सरफेस लाइफ बट ए बेस टु टेक दिस फ्लाइट
बून आफ दाई एक्जिस्टेन्स आल इज हीयर डिनाइड

(लव एण्ड ब्यूटी)

यानी सबमें उनका मुसावी हक हासिल है। आप खुद व खुद फैसला करें कि मोती उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी और भोजपुरी में से किस कल्चर में ज्यादा हक रखते हैं। कहाँ कामयाब हैं और कहाँ नाकामयाब। मैं आपके फैसलें का मुन्तजिर हूँ। मेरे ख्याल से जनाब मोती बीए सब पर मुसावी हक रखते हैं।

उर्दू जवान की शायरी को मद्दे नजर हुए हम उनकी उर्दू शायरी के मुत्तलिक कहना चाहेंगे कि वे कभी बेदम, कभी कुस्ता और आजकल मोती के रूप में जलवागर हैं। आजकल उर्दू शायरी में मोती का दर्जा एक अजीम अदबी-रहनुमा से कम नहीं है। उनके कन्धों पर सिर्फ यही नहीं कि अपने जमाने की रहनुमाई का बार हो बल्कि आने वाले दौर की रहनुमाई का बार भी उन्हीं के सिर है। मोती की नज़्मों और गजलों मुस्तकबिल में ज्यादा मुतासिर हैं और मुस्तकबिल के शोजरा के लिये मिसाले राह हैं। यह इसलिये कि मोती ने अपने गर्दोपेश को अच्छी तरह मुसाहिदा किया है, आज से वाकिफ हैं, गुजरे हुए काल से सबक लिया है और आने वाले काल को मद्दे नजर रखा है। मोती ने उर्दू शायरों की तरह पुरानी खायतों और अस्तोब शायरी को पुराना रूह पर सौदा समझ कर ठुकराया नहीं है। इन बुराइयों को कता नजर करके उसे अपनाने की कोशिश की है। इस खायती शायरी के मिठास और खुल्स भी अपने अन्दर जज्व किया है। इसलिये उनकी शायरी एक ऐसी पुरअसर शैबन गयी है जो शरूर भी बख्शाती है और खुल्स भी, जो चौका भी देती है और सोचने पर मजबूर भी कर देती है। मोती का यह रंग अपना न खायत का बागी है, न हमनबां। मोती हर अकालमन्द आदमी की तरह सिर्फ शाने हयात को मद्दे नहीं रखते बल्कि उसके बाद के असरात का भी ख्याल रखते हैं। उन्हें जिन्दगी का तजरबा है। उन्होंने दुनिया को हर रूप में देखा है। और, सिर्फ यही नहीं कि उनकी दुनिया जलवागाह रही बल्कि मैदाने कारजार भी थी। उन्होंने अमली तौर पर कारेजार हयात में हिस्सा लिया है, जिन्दगी के नग्मों को ठुक-गया है और बाद में उन्हीं नग्मों की ख्वाहिश भी की। यही वजह है कि वे जिन्दगी के हमसरार बन गये और दुनिया इनके लिये तंग नहीं रह गयी। हौसलों की तारीक राहों में उन्होंने मुस्कुराहट की शम्मा जलायी है। उनके सर में सौदा है, दिल में खुल्स भी। वह जन्नूनवाज भी हैं और मौसमे गुल भी। जेब गरीबां चाक करने की दावत भी देते हैं। पुरशिश करम उनके आँसू भी निकल आते हैं मगर वह अपने महबूब की बेवफाई नहीं कहते बल्कि एक अदना चीज महुआ की दोस्ती और आँसू को सोना समझकर अपने दिलेनादां को तसकीन दिलाते हैं, मोती ने साकी और शराब को, महबूब के रूप में ही नहीं बल्कि





वारीतआला को महबूब के रूप में देखा है। कभी इनको खरी खोटी सुनायी और कभी अपने हसूले मकसद की इल्लिजा भी की है। एक मिसाल पेश है-

गुहर ने नीम काम एक ही किया अब तक
खुदा के बाद हसीनों पे जान देने का
उफ गये वक्त बुलन्दी पे ये खयाल हुआ
खुद हसीनों को खुदा पाक मान लेने का

हाले दिल ऐ मेहरबान मत पूछिये
हम तजरबात के हैं सताये हुवे
ये हँसी है जहर की बुझायी हुई
ये ठहाके सभी चोट खाये हुये

सुख रंग का एक सितारा सामने साहिल पे है
दिल ये कहता है कि शायद वो मेरी मंजिल पे है

चमन में वू ए मय चहार सुँ से आती है
लव पे कलियों के जो खुशबू है, नशा लाती है

ऊपर के मिसालात से क्या यह साबित नहीं हो जाता है कि मोती ने दुनिया अच्छी तरह से देखी है। मोती की शायरी शेक्सपीयर की नजरिया की सही अवकाशी है। शायरी मोती के यहाँ तनकीदे हयात है। मोती ने अपनी शायरी में जिन्दगी को इस तरह संवारा है कि उससे प्यार करने को जी चाहने लगता है। यहाँ आँसू भी है और मुस्कानें भी। गरज कि मोती का शऊर इस तरह पोख्ला है कि वह जिन्दगी के मैदान में खड़े होकर खेल भी सकते हैं और मुकाबला भी कर सकते हैं। मोती मुस्कुराहट के साथ आसूँ को ज्यादा तरजीह देते हैं यहाँ तक कि गम उनकी शायरी का एक जुज है। उन्होंने दुनिया को हर रूप में देखा है। आज की दुनिया को मददे नजर रखते हुवे यह शेर पढ़िये तो मोती के मुसाहदा की दाद देनी पड़ती है।

तुम हसीं हो, जवां हो और अलमस्त हो
दर्द पाला है मैंने तुम्हारे लिये
बात अपनी जमाने से की दो सनम





तुमने जो भी किया हो हमारे लिये
मोती का शायरी सिर्फ दिल की नहीं, बड़े दिमाग की है। यही वजह है कि वो जिन्दगी के बारे में सोचकर
उदास नहीं होते बल्कि जिन्दगी की महसूसियों का राज भी बताते हैं-

कुछ न रह जाय तो इक गम है जो रह जाता है
दौर फानी में ये क्या है जो रह जाता है !

अपनी किस्मत का रोना भी क्या रोइये
बेवफा, तुमसे ज्यादा हयादार है,
एक तुम हो कि आँखें मिलाते नहीं
एक वह जो लिपटने को तैयार है।

मोती ने सिर्फ दुनिया और जिन्दगी को अपना मौजुअ सुखन नहीं बनाया बल्कि गजल रुबाइयात के शायर
की हैसियत से उन्होंने हुस्न, इश्क रंजो अलम और मौजुआत पर भी अपनी छाप लगा दी है। हुस्न के
वारगाह में उर्दू-शायरों की तरह मोती ने सजदे किये हैं और अपने महबूब को जीते जागते तस्वीर का रूप
दिया है। मोती का महबूब इस दुनिया का वासी है उन्हें बरबाद करने वाले कुछ योंही जैसे हैं कोई महापारा
जांफरोज हसीन नहीं है। उन्होंने अपने महबूब को इन्सान देखना ज्यादा पसन्द किया है।

गुहर ने नीम काम एक ही किया अब तक
खुदा के बाद हसीनों पे जान देने का
उफ, गये वक्त बुलन्दी पे यह ख्याल हुआ
खुद हसीनों को खुदा पाक मान लेने का





सीन ख़्वा हम शरहा शरहा अज फिराक ता वेगोयम शरहे दर्दे इश्तयाक

ईश्वर का फजल है कि उसने एक मोती दिये जो बकौले मौलाना रूम राजे दर्दे नीहानी की तर्जुमानी में महारते कामिल रखते हैं। यों तो मैं शैरो व सुखन के फहम की ताकत नहीं रखता कि कमाहकहू मोती बीए के कलम की नुक्ताचीनी कर सकूँ। लेकिन उर्दू जुबान के खादिम के रिश्ता से कुछ कहने की हेमाकत करता हूँ। सचमुच मोती शायरी बहर का एक अजीमुश्शान मोती है। मखलूक के हालात ख्यालात और रहन-सहन का सच्चा पारिख है। जितनी गहरी व बारीक नजर से इन्सान को देखा है, उतनी गहरी नजर से कम लोग देखते हैं, यह हमारा जाती तजरबा है। इसमें मुबालगा नहीं। ये इनके साथ रहने, इनके कलाम को सुनने और अमल को देखने से मुझे मालूम हुआ। इसके अलावा ये शायर हैं इनके मुतलिक मुझे कुछ कहने का हक नहीं है क्योंकि मैं शायर नहीं हूँ।

धर्मराज उपाध्याय





श्री मोती बीए की शायरी के मुतअलिक चंद बातों पर जिनमें खास अहमियत है रोशनी डालना चाहता हूँ। आपके कुछ अश्वार ऐसे हैं जिनकी कशिश हिम्मत-पस्ती से हिम्मत बस्तगी के तरफ होती है और कुछ शीरी नग्मे जाँ-बलब दिलों में रूह अफजाई की महक बरपा कर देते हैं। कुछ शेरों में अमल की खूबियों की चमक जाहिर होती है। रोजमर्रे की आम बातों को आप ऐसे पैराया देते हैं कि नसायह अदबी की झलक पेशे नजर होने लगती है।

तसौवर में आता है कि रश्के गुहर के गुहर की तशविह निजामी साहब के गुहर से दे सकते हैं जिसको उन्होंने सिकन्दरनामा में लिखा है-

तूई कफरीदी जे एक कतरे आब।
गुहर-हाय रोशनतर अज आफताब।।

या सादी साहब अपनी किताब बूस्तां के उन शेरों की याद दिलाते हैं जो उन्होंने एक बादशाह की तारीफ में लिखा है -

सदफ रा कि बीनी जे दुर्-दान पर ।
न आँ कद्र दारद कि एक-दाना दुर्।।
तू आँ दुर् मक्नून एक-दानई।
कि पैराइये सल्लनत खानई।।

राजेंद्र नारायण श्रीवास्तव, बी.ए., ए.टी.सी
रिटायर्ड सिनियर टीचर अंग्रेजी व इल्मे रेयाजी,
वी. एन. इण्टर कालेज, मझौली राज,
जिला देवरिया

बरहज, 14-10-72





मोती बीए : एक नजर

रब्बे ताला ने हमको अता कर दिया
बहरे सरयू मे हमको गुहर मिल गया
जब जमानत की हमको जरूरत हुई
एक अनमोल मोती जो दरपेश की
पहले धबराये वो, फिर भी शरमाये वो
कसे नाचीज को गुहर मिल गया।
रब्बे ताला ने हमको अता कर दिया
शेक्सपीयर को गौहर है पहचानता
'बेन एजरा' को नजदीक से जानता
फस्ले वारी में महुए से की दोस्ती
बहरे वीरों में प्यासा हिरन मिल गया
रब्बे ताला ने हमको अता कर दिया
कृष्ण के आसरम में पुजारी है अब
पीर मुरशिद बने ब्रह्मचारी जी जब
वक्फ की जिन्दगी; हक परस्ती में वो
इष्ट के रूप में सुत पवन मिल गया
रब्बे ताला ने हमको अता कर दिया
जिनको हों अशक सोने के कतरे बने
सारी दुनिया हसी की गले जो मिले
जिनका तकिया बना चाँद इकबाल हो
गम न कर तुमको ऐसा गुहर मिल गया
रब्बे ताला ने हमको अता कर दिया

असफाक अहमद
बरहज, देवरिया





तुम्हीं कबूल करो-

यह दर्दे शायरी
यह साजे जिन्दगी
यह सोजे हसरतें
यह तर्जे आफरी

यह दिलनशी बयाँ
यह राजेदिल अयाँ
मिलें न खाक में-
ये अश्क हैं रवाँ

तुम्हारी राह में
तुम्हारी चाह में
यह शायरी बनी-
तुम्हारी छाँह में

तुम्हीं से जिन्दगी - तुम्हीं पै आफरीं
तुम्हीं से शायरी - तुम्हीं पै आफरीं
तुम्हीं से हसरतें - तुम्हीं पै आफरीं
तुम्हीं पै आफरीं - तुम्हीं पै आफरीं

तुम्हीं कबूल करो !

मोती बी ए





इस पुस्तक में श्री मोती बीए द्वारा संग्रह की गयी कवितायें

क्र. कविता/गजल

1. सिद्धाने चाँद है
2. यह कैसा असर है
3. इलाही गुजार दे
4. मजा आता है
5. फिजों कह रही है
6. सैयाद तुमको बर्द
7. रुलाना ही तुम्हें जब था
8. सताये हुए हैं
9. हवा आज रोती
10. तूने है दिया जो गम
11. खुदा से रंज नहीं
12. धुआँ सा हो उठा
13. चल दिये
14. जमाने की ठोकर
15. गरीबों की कहानी
16. दिल्लगी खूब रही
17. आस बात है
18. पदे लिखे बेकार
19. मुबारक हो, मुबारक हो
20. ये दिन रहें मुबारक
21. गाया न जायेगा
22. लबों पर आरजू
23. जगह मिल जाय
24. नदिया के पार की कौव्याली
25. सम्हाल ले
26. शायरी सबको





27. आया हुआ हूँ
28. तड़पाने वाले
29. ऐ जमाने
30. देखा है जब से उनको
31. लिखती हूँ कहानी
32. कहाँ चला
33. आये हैं
34. असर देख लेना
35. बजाये जाओ बंशी
36. यह जिन्दगी सफर है
37. गुजरती है जिस पर
38. जिन्दगी पायी है
39. न हम समझे, न तुम समझे
40. उधर तुम हो, इधर हम हैं
41. गुलशन
42. कौम की अमानत
43. तमन्ना कौन करे
44. अलविदा
45. एक और कदम
46. आँसुओं का असर
47. इधर से बादे सबा
48. चादर में मुँह को तोप
49. मरिया
50. कताते मयकदा, दीगर कतात





सिढ़ाने चाँद है

सिढ़ाने चाँद है मुझसे लिपट कर चाँदनी सोई
मुझे क्या गम अगर दुनिया में मेरा हो नहीं कोई

अन्धेरी रात में मुझसे सितारे बात करते हैं
कोई पूछे स्कीबों से वो क्यों दिन रात मरते हैं
हवा जब गोद में लेकर मुझे सुख से सुलाती है
थकावट के नशे में बेखुदी तब रंग लाती है

फलक से नींद की परियाँ उतर कर पास आती हैं
तरनुम रुह में जब छेड़ कर कुछ गुनगुनाती हैं
नजर में जलबये जन्नत असर अपना दिखाता है
खुदी को बेखुदी करके खुदाई से मिलाता है

निकल कर रुह तब घर से खुदा के पास जाती है
सुनाकर दास्ताँ सारी सुबह तक लौट आती है
शरम से चाँद औ तारे उफक में मुँह छिपाते हैं
खुदाई नूर से मामूर शब में लौट आते हैं

मुलाकातें शुरू होतीं हमारी चाँद तारों से
हमारी जिन्दगी कायम हसीनों के इशारों से
मगर जन्नत का यह जलवा सुबह हम भूल जाते हैं
हकीकत दरअसल हम शाम को ही जान पाते हैं





यह कैसा असर है

जिस हाथ से फूल रंगा तूने उस हाथ से खार बनाया क्यों
जिस हाथ से मिट्टी जिन्दा की उस हाथ से खाक मिलाया क्यों

रंगसाज, तेरे रंग में यह कैसा असर है
है रंग एक लेकिन दो शामों सहर है
मिट्टी को रौंद करके तूने बनाये प्याले
एक ही शकल हैं उनके साँचे में एक ढाले
एक में भरा है अमरित औ एक में जहर है
यह कैसा असर है ! रंगसाज, तेरे रंग . . .

आँसू कोई बहाये, खुशियाँ कोई मनाये
कोई दिया जलाये, कोई दिया बुझाये
क्यों एक ही सूरत पर दो तेरी नजर है
यह कैसा असर है ! रंगसाज, तेरे रंग . . .

पानी का एक कतरा मोती है तू बनाता
आँखों का वही पानी क्यों धूल में मिलाता
यह जुल्म है धोखा है, सितम है औ कहर है
यह कैसा असर है ! रंगसाज, तेरे रंग . . .

घर से मुसाफिरी को निकले हैं दो मुसाफिर
एक को शमाँ दिखायी इक को बनाया गाफिल
मंजिल है एक लेकिन दो राहे सफ़र है
यह कैसा असर है ! रंगसाज, तेरे रंग . . .

जब बात एक सी है दो किस लिये बनाता
एक चीज है मिटाता एक चीज है बसाता
दोरंगी दुनिया की तुमको भी खबर है



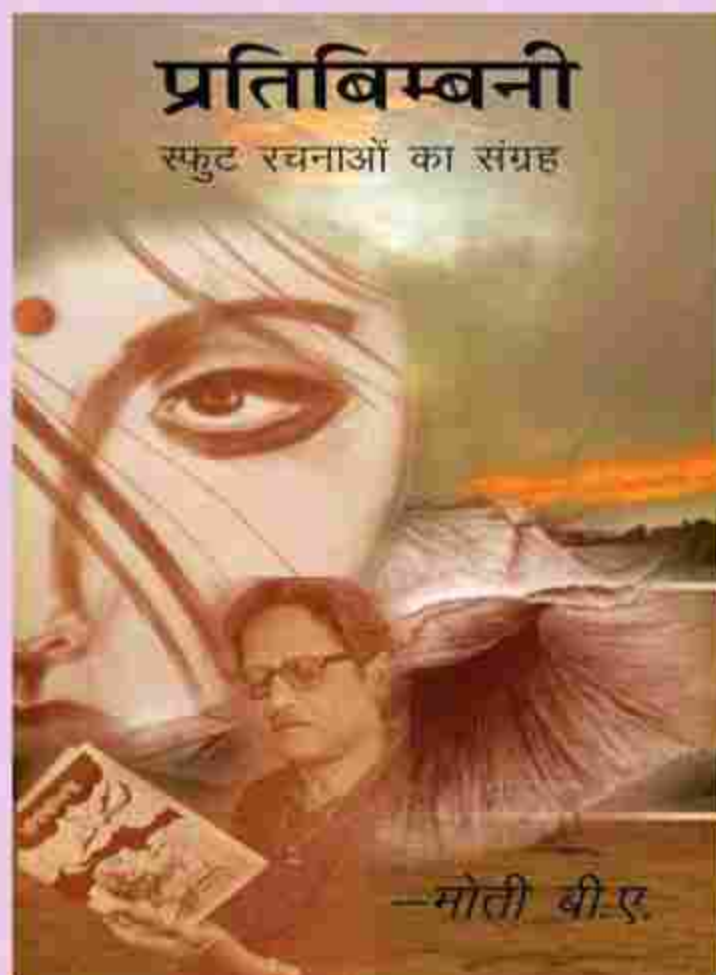


यह कैसा असर है ! रंगसाज, तेरे रंग . . .

ऐ रंगसाज, ऐसी तस्वीर इक बना तू
जिसमें बस एक रंग की कारीगरी दिखा तू
तस्वीर में इस तेरी कुछ कोरोकसर है
यह कैसा असर है ! रंगसाज, तेरे रंग . . .



नये संस्करण में शीघ्र प्रस्तुत, सम्पदा के वेइसाईट पर





इलाही गुजार दे

हम बेकसों की रात इलाही गुजार दे
इस बेकरार दिल को कुछ तो करार दे
भँवरों में जा फँसी हो वह किशती न दिखा तू
मझधार डूबा दे या किनारे उतार दे
किस्सा यह मुस्तसर है दो दिलों की बात का
फुरकत की रात दे तो सेहर खुशगवार दे
परहेज खार से नहीं, गुल से न मुहब्बत
गुल एक लाजिमी है जो काँट हजार दे
वस्ले सनम का एक ही लमहा दिया तो क्या
फुरकत के बाद दे तो इसे बेशुमार दे
ये शायरी, ये नग्में, ये साज, ये सितार
यह सब अता करे तो बजा तार तार दे





मजा आता है

आँख मिलते ही मुहब्बत का मजा आता है
दिल तड़पता है कहीं भी न चैन पाता है
याद आती है तो आती हैं गुलाबी आँखें
और यह दिल है कि उन आँखों में मिटा जाता है
खाब आता है तो आता है उन्हीं आँखों का
मिट के दुनिया में उन आँखों में बसा जाता है
दिल तो ये चाहता आँखों में बिठाये उनको
ख्याल आते ही अजब हाल हुआ जाता है
याद आता है उनका आँखों में मुस्का देना
हालते दिल है कि बेताब हुआ जाता है





फिजाँ कह रही है

फिजाँ कह रही है कि वो आ रहे हैं
सितारे भी छिटफुट नजर आ रहे हैं
जमी में नमी है, उफ़क रौशन आरा
निगाहों के तारे लुटे जा रहे हैं
वो आयेंगे आलम को रौशन करेंगे
दिये दहर पर ये सजे जा रहे हैं





सैयाद, तुमको दर्द

सैयाद, तुमको दर्द कुछ होता नहीं है क्या
तुँ खून के आँसू कभी रोता नहीं है क्या
कोई तुम्हारी आँख से बच ही नहीं पाता
तुँ एक पल भी चैन से सोता नहीं है क्या
तुँ क्यों किसी मासूम पै बिजली गिरा देता
जालिम, किसी का तुँ कभी होता नहीं है क्या





रुलाना ही तुम्हें जब था

रुलाना ही तुम्हें जब था मुझे तब क्यों हँसाया था
बता दो आस्माँ, क्यों चाँद मेरा मुस्कराया था
किया था रुह को रौशन, नयी उम्मीद थी बँधी
बुझाना ही तुम्हें जब था, दिया तब क्यों जलाया था
चमन में हसरतों के अब जवानी रो रही मेरी
गिराना ही तुम्हें जब था मुझे तब क्यों उठाया था
लगा कर जिन्दगी में आग तुमको सुख मिलेगा क्या
मिटाने के लिये ही क्या मुझे अपना बनाया था





सताये हुए हैं

किसी बेवफा के सताये हुए हैं
बड़ा दर्द दिल में छुपाये हुए हैं
हँसी आ रही है मुझे आँसुओं पर
मुझे वो दीवाना बनाये हुए हैं
मेरी हसरतें खाक में मिल गयी हैं
वो औरों को सीने लगाए हुए हैं
मिटाने हुए दर्द होता न उनको
कि हम भी किसी के बनाये हुए हैं
जफा करने वाले वफा क्या करेंगे
मगर आसरा हम लगाये हुए हैं
अन्धेरे में ठोकर उन्हें लग न जाये
नजर की शमा हम जलाये हुए हैं
मेरी जिन्दगी गुम की मारी कहानी
उन्हें यह कहानी सुनाये हुए हैं
हमारी भी तो मौज की जिन्दगी है
समुन्दर में तूफ़ाँ उठाये हुए हैं





हवा आज रोती

हवा आज रोती किधर जा रही है
गुलों से भी खुशबू नहीं आ रही है
छुड़ाता है दामन कली का ये भँवरा
नदी आँसुओं की बही जा रही है
चमन में जिधर देखो जर्दी है छाया
दरख्तों में कोयल नहीं गा रही है
अभी एक कली डाल पर हँस रही थी
पड़ी धूल में वो नजर आ रही है
गमी में खुशी और खुशी में गमी है
समझ में नहीं बात यह आ रही है व





तूने है दिया जो गम

तूने है दिया जो गम तो आँसू है क्यों दिया
मेरी वफा के बदले तूने ये क्या किया
क्या हाल हो गया है आकर तो देख जाते
आना न था तुम्हें जब वादा था क्यों किया
थी क्या खता जो तूने रोने की यह सजा दी
जब भूल ही जाना था क्यों दिल में घर किया





खुदा से रंज नहीं,

खुदा से रंज नहीं, रंज है खुदाई से
सनम से रंज नहीं, रंज है जुदाई से
हसरतों का मैं करूँ खून इस तरह कब तक
बाज आया मैं सनम ऐसी आशनाई से
हो गया स्याह फलक गुम की भी हद होती है
किस कदर जिन्दगी मजबूर है तनहाई से
छुप के अब चाँद सितारे भी मुझसे रहते हैं
सारी खिलकत है भर गयी मेरी रुसवाई से





धुँआ सा हो उठा

आसमान यह धुँआ धुँआ सा हो उठा
कौन अपना आशियाँ जला रहा है
चीर कर जिगर पहाड़ आज वह चले
कौन आँसुओं को यूँ गला रहा है
टूट टूट कर सितारे आज बुझ रहे
कौन अपनी जिन्दगी लुटा रहा है
जोर से हवा का यह झोंका किधर चला
मौत कौन साँस पर चला रहा है





चल दिये

उठ गया बिस्तर जहाँ से आँख मूंदे चल दिये
दिल की दिल में रह गयी औ' आँख मूंदे चल दिये
दिल लगाने का मजा दुनिया में पाया इस कदर
दिल तो रोता रह गया औ' आँख मूंदे चल दिये
जिन तमन्नाओं की खातिर जिन्दगी बरबाद की
छोड़कर उनको तड़पते आँख मूंदे चल दिये
आँसुओं ने जिन्दगी दी, खून से सींचा जिसे
छोड़कर तनहा उसे भी आँख मूंदे, चल दिये
साथ में कुरान ले जाने का जिनका खयाल
छोड़कर उसको सिढ़ाने आँख मूंदे चल दिये
थी मेहरबानी अता की जिसमें जिस्मे रुह को
उस खुदा का नाम लेते आँख मूंदे चल दिये





जमाने की ठोकर

जमाने की ठोकर तूँ खाये चला जा
मगर दिल की दौलत लुटाये चला जा
कभी याद तुमको ये दुनिया करेगी
तूँ दुनिया को दिल में बसाये चला जा
जमाने की हरकत से आजिज न होना
सभी नाज नख़रे उठाये चला जा
अगर तूँ तड़पता तो इससे हुआ क्या
तूँ पहलू में दिल को दबाये चला जा
कभी तूँ भी होगा बुलन्दी पे इक दिन
इसी धुन में तूँ लौ लगाये चला जा
जमाना बड़ा सख्त है बेवफा है
इसे राजे उल्फत बताये चला जा





गरीबों की कहानी

आवो, सुनायें आज गरीबों की कहानी
पढ़ती हैं अमीरों की जिन्हें ठोकरें खानी

जिनका गुनाह यह है कि कोई नहीं गुनाह
मर जायें भलें हीन जो भरते हैं कभी आह
जिनके लिये जालिम ने कभी की नहीं परवाह
पुरदर्द कहानी ये सुनो मेरी जबानी
आवो, सुनायें आज गरीबों की कहानी

जिनके कदम के नीचे मजलूम सो रहे
जिनकी वजह गरीब ये महसूस हो रहे
जिनकी खुशी के वास्ते यतीम रो रहे
जिनके लिये इस जिस्म का यह खून है पानी
आवो, सुनायें आज गरीबों की कहानी

ऐसे हसीन का हम मुँह क्यों न नोंच लें
ऐसे जवान का गला हम क्यों न घोट दें
हम क्यों न उस चमन को दिल दहाड़े लूट लें
जिसकी कली कली की आँखों में हो न पानी
वेशर्म जिन्दगानी, वेशर्म जबानी
आवो, सुनायें आज गरीबों की कहानी

हम एक कदम भी राह अपनी चल नहीं सकते
अशकों में और ज्यादा ढल नहीं सकते
जब तक हसीन हस्तियाँ कुचल नहीं सकते
हमको हसीन खाक में है राह बनानी





बेशर्म जिन्दगानी, बेशर्म जवानी
आवो, सुनायें आज गरीबों की कहानी

सुनने से मेरी बात नहीं फायदा कुछ भी
जैसे मिटे मिटाओ नहीं कायदा कुछ भी
जो कुछ करो न जायगा खूँ तयगा कुछ भी
देखो खुदा की जल रही है लाल निशानी
बेशर्म जिन्दगानी, बेशर्म जवानी
आवो, सुनायें आज गरीबों की कहानी

सुनकर ये कहानी अपने घर को जाइए
ऐसी जलील जिन्दगी जल्दी मिटाइए
अपनी वो अपने कौम की अजमत बचाइए
हमको न बार बार है यह जिन्दगी पानी
बेशर्म जिन्दगानी, बेशर्म जवानी
आवो, सुनायें आज गरीबों की कहानी





दिल्लगी खूब रही

दिल्लगी खूब रही उनसे दिल लगाने में
होके बदनाम रह गये हैं अब जमाने में
क्या करेंगे वो जवानी में खुदा ही जाने
हम तो बरबाद हुवे उनको आजमाने में
वो भी मजबूर हुवे इस कदर जमाने से
अब न लज्जत है कोई उनके पास जाने में
अशक आँखों में नहीं, लव पै है फरियाद नहीं
आग है खूब लगी दिल के आशियानें में
अबलमन्दों के लिये एक इशारा काफी
फायदा कुछ नहीं जलने में और जलाने में
उनको आना हो तो बेपरदा ही आयें जायें
अब वो बातें न रहीं छुपने और छिपाने में





ये दिन रहें मुबारक

ये दिन रहें मुबारक

ये दिन हैं वो कि जिनमें
तू याद बहुत आता
सब कुछ हमें है हासिल
कुछ भी मगर न भाता
तू जिन दिनों मिलता
वे दिन रहें मुबारक
ये दिन रहें मुबारक

दिन बीत जो गये हैं
भूले से भी न आयें
अब इन हसीन घड़ियों
को भी न लूट जायें
तू जिन दिनों का साथी
वे दिन रहें मुबारक
ये दिन रहें मुबारक

ये दिन रहें मुबारक
और तू रहे सलामत
जो ग़म मिले सहूँगा
ता जीस्त ता क़यामत
जो दिन दिये हैं तूने
वो दिन रहे मुबारक
ये दिन रहें मुबारक





गाया न जायगा

टूटा हुआ ये साज है गाया न जायगा
हमसे ये राज दिल का बताया न जायगा

तकदीर मेरी फूटी ये साज जबसे टूटा
टूटे हुवे तारों को मिलाया न जायगा

बरबाद जिन्दगी है फरियाद क्या करूँ मैं
मुझसे किसी के दिल को दुखाया न जायगा

दिल में है याद बाकी साँसों में नाम है
लेकिन वो नाम लब पे लाया न जायगा

क्या देखते हो मेरी उजड़ी हुई दुनिया को
घर जो उजड़ गया वो बसाया न जायगा





लवों पै आरजू

लवों पै आरजू, दिल में मेरी फरियाद होती है
बचा लो फूल सी दुनिया अरे, बरबाद होती है

तमन्ना आँख से बहती हुई रोती हुई जाती
तमन्ना इस तरह क्यों खाक में आबाद होती है

आरजू है रो रही दिल में तमन्ना रो रही
सोजिशों लव की हँसी की हाय, कैसी हो रही

आँख में आँसू न थमते जा रहे बहते उधर
फूल सी एक जिन्दगी बरबाद देखो हो रही

क्या करूँ, कैसे उन्हें लूँ रोक, जाने दूँ नहीं
रो रहे अरमाँ इधर हिम्मत उधर है हो रही





जगह मिल जाय

कोई चैन की जगह मिल जाय

गम से भरी हुई खामोशियों के आलम में
चाँदनी मर गयी तारीकियों के मातम में
आँखें रोयें न जहाँ
और न जहाँ दिल धबराय
कोई चैन की जगह मिल जाय

सर्द कूब्रों से भी आती नहीं सदा कोई
जिन्दगी मौत की दरिया के किनारे सोई
अर्श झुक जाय जरा
औ' जरा जमीं हिल जाय
कहीं चैन की जगह मिल जाय

अब न उम्मीद कोई सत्र की हद देख चुका
अब तड़पने के मजे जिन्दगी में देख चुका
आँख की बूँद हँसे
होठों की लाली खिल जाय
कहीं चैन की जगह मिल जाय





‘नदिया के पार’ की कौबाली

(फिल्म ‘नदिया के पार’ के लिये लिखी गयी पूरी कौबाली, जिसमें से चार बन्द जिन पर, चिढ़ि अवस है, पिक्चर में रखे गये।)

नन्ही सी जान में है जवानी का सितम क्यों
रग रग में नशा और नशे में है दर्द क्यों
यह इसलिए कि जिन्दगी में प्यार किया जाय
दो चार दिन ये प्यार से गुजार दिया जाय

गुलशन में डाल डाल पै कलियाँ है क्यों खिलीं
कलियों की मस्त आँखों में सुखी है क्यों मिली
यह इसलिये कि इन्हें गले का हार किया जाय
दो चार दिन ये प्यार से गुजार दिया जाय

सागर शराब साकिया पैमाना किसलिये
हुस्नो शबाब का ये जमाना है किसलिये
यह इसलिये कि इन पै दिल निसार किया जाय
दो चार दिन ये प्यार से गुजार दिया जाय

आँखों से आँखें मिल गयीं फिर भी न चैन क्यों
पहचान हो गयी है मगर बेवसी है क्यों
यह इसलिये कि अब न इन्तजार किया जाय
दो चार दिन ये प्यार से गुजार दिया जाय

ठुकराइये ये दिल मगर है मानता न क्यों
जाता है बार बार उसी बेवफा पै क्यों
यह इसलिये कि दिल को गिरफ्तार किया जाय
दो चार दिन ये प्यार से गुजार दिया जाय

ये इश्क के अफसाने है बदनाम किसलिये





महबूब परीशान किये जाते किसलिये
यह इसलिये कि हुस्न को निखार दिया जाय
दो चार दिन ये प्यार से गुजार दिया जाय

घिर आती हैं घटायें बरसने के बाद क्यों
रुक जाती हैं हवायें गरजने के बाद क्यों
यह इसलिये कि प्यार बार बार किया जाय
दो चार दिन ये प्यार से गुजार दिया जाय

अलमस्त निगाहों में है छापी बहार क्यों
अरमान हैं मचल उठे बेअस्तियार क्यों
यह इसलिये कि स्वाब को बेदार किया जाय
दो चार दिन ये प्यार से गुजार दिया जाय

होठों में म्विल गया है तन्वसुम ये किसलिये
दिल चाहता आँखों में समा जाना किसलिये
यह इस लिये कि चमन यह गुलजार किया जाय
दो चार दिन ये प्यार से गुजार दिया जाय

माशूक की आँखों में इन्तजारियाँ है क्यों
इन इन्तजारियों में बेकरारियाँ है क्यों
यह इसलिये कि इनको कुछ करार दिया जाय
दो चार दिन ये प्यार से गुजार दिया जाय

सीने में मचलता है इश्क बार बार क्यों
रह रह के धड़क जाता है दिल प्यार भरा क्यों
यह इस लिये कि प्यार पै एतबार किया जाय
दो चार दिन ये प्यार से गुजार दिया जाय





दो दिल जब एक होते हैं तब दो बने हैं क्यों
मिलने की तमन्ना है मगर मिलते नहीं क्यों
यह इसलिए कि दिल पै दिल निसार किया जाय
दो चार दिन ये प्यार से गुजार दिया जाय

इन मस्त निगाहों में परीशानियाँ हैं क्यों
बेताब दो दिलों में यूँ जवानियाँ हैं क्यों
यह इसलिये कि इश्क का इषहार किया जाय
दो चार दिन ये प्यार से गुजार दिया जाय





समहाल ले

दिल के हुए जो टुकड़े इनको समहाल ले
टूटे हुए प्याले में कुछ और ढाल ले
उम्मीद मर चुकी है, बरबाद तमन्नायें
हसरत जो रह गयी हो उसे भी निकाल ले
वे कैफ जिन्दगी में भूले से चले आये
बहके हुए जाते जो उन्हें भी पुकार ले
गुल तोड़ के गुलची ने खारों से दिल बसाया
कहने लगा वो आखिर एक और खार ले
तकदीर खींच लाई उजड़े हुए चमन में
आया है गर यहाँ तो घड़ी भर गुजार ले
गुलशन में हर जगह पै यकसाँ तुझे मिलेगा
जाता कहाँ मुसाफिर दिल में मलाल ले





शायरी सबको

शायरी सबको इल्मयाफ़ता बनाती है
इल्म से दूर है वह इल्म से न आती है
हुनर वालों के लिये खुले कारख़ाने हैं
शायरों के लिये फ़क़त शराबख़ाने हैं
कारख़ानों में हुनर सीख लो कुछ काम करो
शराब पी के ऐ शुभरा इन्हें सलाम करो
पसन्द इनको तुम्हारे कलाम आयेंगे
तुम्हारे वास्ते चुनकर ईनाम लायेंगे
तुमको खुश होके सब देंगे एक नया पैसा
तुम न पछतावोगे कमबख़्त फिरदौसी जैसा





आया हुआ हूँ

मुहब्बत की दुनिया में आया हुआ हूँ
परीशान हूँ दिल दुखाया हुआ हूँ

सिवा गम के हम दम न कोई हमारा
निगाहों से नीचे गिराया गया हूँ

जमाना मुझे क्यों जले पर जलाये
सरेआम जब कि मिटाया गया हूँ

अधूरी कहानी सुनो, सुनने वालों
दीवाना किसी का बनाया हुआ हूँ

न अरमान कोई, न पहचान कोई
मैं पूरी तरह से भुलाया गया हूँ

कशिश अपने दिल की कहूँ भी तो कैसे
मैं महफिल से उनकी उठाया गया हूँ

मेरे राजे दिल को न जाने जमाना
मैं आँखों में उनकी समाया हुआ हूँ

मुहब्बत की मंजिल पे आके रुका हूँ
यहाँ से भी आगे बुलाया गया हूँ





तड़पाने वाले

सलामत रहें हमको तड़पाने वाले
दुआ दे रहे हैं दुआ देने वाले
हमारी कसम है हमें भूल जाओ
निगाहों से आँसू गिरा देने वाले
न रोनेका शिकवा न मिटने का गम है
मगर याद आये तो कैसे सम्हालें
जो आँसू बहेंगे तो बदनाम होंगे
मुहब्बत में दुनिया मिटा देने वाले
मुहब्बत में गम औ खुशी है बराबर
हमारे लिये तू यह गम भी उठा ले





ऐ जमाने

बता दे ऐ जमाने किसलिये तू प्यार करता है

हमारे पास तो केवल मुहब्बत से भरा दिल है
मगर जाहिर करूँ कैसे यही एक सख्त मुश्किल है
न तू एकरार करता है, न तू इनकार करता है
बता दे ऐ जमाने किसलिये तू प्यार करता है

अगर अरमान है कोई तो हमसे तू गले मिल ले
मुहब्बत से भरा दिल ले, मुहब्बत से भरा दिल दे
न तू खामोश रहता है न तू एतबार करता है
बता दे ऐ जमाने किसलिये तू प्यार करता है

नहीं शिक्वा गिला कोई न हम फरियाद करते हैं
फकत इक दिल की दुनिया है जिसे आबाद करते हैं
मगर तू है कि जीना हर तरह दुश्वार करता है
बता दे ऐ जमाने किसलिये तू प्यार करता है





देखा है जब से उनको

देखा है जब से उनको दुनिया बदल गयी है
दिल हो गया दीवाना हसरत मचल गयी है
छिप छिप के मेरे दिल में कोई ये गा रहा है
वो क्या मिले खुशी की दुनिया ही मिल गयी है

शायद उन्हें अभी तक इसका पता नहीं है
उम्मीद की कली अब गुलशन में खिल गयी है
अब एक ही तमन्ना रह रह के उठ रही है
वो भी जवाँ से कह दें तबियत मचल गयी है





लिखती हूँ कहानी

जो बीत रही दिल पे लिखती हूँ कहानी
आ जा कि तेरे प्यार की मिटती है निशानी

आँसू की हर इक बूँद में लुटती हैं उम्मीदें मिटती हैं उम्मीदें
हँसती हुई दुनिया में रोती है जबानी, लिखती हूँ कहानी

बरबाद जिन्दगी में जायें तो किधर जायें, यह दिल किसे दिखायें
फरियाद भी करें क्या अशकों की जबानी, लिखती हूँ कहानी

दुनिया ने मेरे दिल की दुनिया को उजाड़ा है किस्मत ने बिगाड़ा है
होठों पे नाम तेरा आँखों में है पानी, लिखती हूँ कहानी

मिटने पे जो आवोगे आँसू ही बहावोगे खुद को भी मिटावोगे
ढूँढ़ोगे न पावोगे कोई भी निशानी लिखती हूँ कहानी





कहाँ चला

रात का वक्त है तारों का कारवाँ सोया
चाँद है डूब रहा नींद में खोया खोया
एक हम है कि रात में भी चैन ना पायें
हाय, किस्मत के सताये हुए कहाँ जायें
जिन्दगी का कारवाँ, कहाँ चला

आँखों में बह रहा तूफान
होटों में काँप रही फीकी मुस्कान
बतलाये कौन भला,
आशा का बाग कहाँ फूला फला
जिन्दगी का कारवाँ, कहाँ चला

आगे छाया है अन्धेरा
लूट लिया साँझ ने सोने का सबेरा
आगे छाया है अन्धेरा
मेरी मंजिल का पता कौन बताये
कौन मुझे आगे की राह दिखाये
पूछ रहा हूँ सबको रुला, रुला
जिन्दगी का कारवाँ, कहाँ चला

छिप छिप के रोता एक सुन्दर सपना
दुनिया में कौन भला होता अपना
जीवन के चौराहे से गुजरा
पत्थर की छाती पिघला पिघला
जिन्दगी का कारवाँ, कहाँ चला





आये हैं

हम अपने यार से आँखें मिलाने आये हैं
कुछ उनकी सुनने कुछ अपनी सुनाने आये हैं
चुमें न पाँव में काँटि रखीब नजरों के
हम उनकी राह में आँखें बिछाने आये हैं
किया तबाह हमें इस क़दर जमाने ने
नजर चुरा के जरा मुस्कराने आये हैं
गिर के दाग जलेंगे तो जलन कम होगी
हम अपने दिल की तपिश यों बुझाने आये हैं
जरा सी बात में हम हो गये शैदा जिनके
उन्हीं को आज हम शैदा बनाने आये हैं
गुनहगार हम दीदार की खातिर मोती
तुम्हारे सर की कसम सर झुकाने आये हैं





असर देख लेना

मुहब्बत का मेरी असर देख लेना
बसेगा रकीबों का घर देख लेना
जो आयेंगे आँसू तो हँस के कहेंगे
उधर जाने वाले इधर देख लेना
तेरा नाम लब पे तड़पता रहेगा
न होगी किसी को खबर देख लेना
वफाओं का बदला शफाओं से देना
निगाहों में आँसू अगर देख लेना
तेरी याद में हम जियेंगे, मरेंगे
मिलेंगे न हम तुम मगर देख लेना





बजाये जाओ बंशी

(फिल्मिस्तान लि. की फिल्म 'शबनम' के लिये यह गजल-गीत मंजूर हो चुका था मगर अन्दरूनी बज्रहात से खारिज हो गया।)

खुदा की दी हुई यह जिन्दगी नियामत है
जिस्म भी अपना नहीं उसकी ही अमानत है
रुह की शक्ल में वह भी इसी में रहता है
जिन्दगी रो के बिताये तो उसे लानत है

आवो, जंगल में मंगल मनाये चलें हम
तुम बजाये जावो बंशी, और गाये चलें हम

कहीं से आये है और दूर कहीं जाना है
अलग है रास्ते अलग अलग ठिकाना है
आवो, दिल की यह दुनिया लुटाये चलें हम
तुम बजाये जावो बंशी, औ गाये चलें हम

न खुश रहने का सामाँ है, न रोने की इजाजत है
अजब कसमकस में है जीना, यहाँ आफत ही आफत है
आवो, हँस के मुसीबत उड़ाये चलें हम
तुम बजाये जावो बंशी, और गाये चलें हम

हमारे पास जो साँसों का इक खजाना है
न जाने कब ये खाली हो कि इसका क्या ठिकाना है
आवो, पलकों से 'शबनम' उठाये चलें हम
तुम बजाये जावो बंशी, और गाये चलें हम





यह जिन्दगी सफर है

कोई कहीं से आता
कोई कहीं को जाता
कोई तो हँस रहा है
आँसू कोई बहाता
दुनिया की ठोकरों में-
बेचैन हर बशर है
यह जिन्दगी सफर है

मस्ती कोई लुटाये
दुनिया कोई बसाये
कोई तो जा रहा है
दिल की हविश दबाये
दामन किसी किसी का -
अशकों से तर बतर है
यह जिन्दगी सफर है

सब अपनी अपनी धुन में
सब अपने गम से ऊबे
कितने तो पार पहुँचे
कितने इसी में डूबे
कहने को काफिला है-
मंजिल से बेखबर है
यह जिन्दगी सफर है





गुजरती है जिस पर

गुजरती है जिस पर वही जानता है
मनाता हूँ दिल को नहीं मानता है

जो आँखें न होती तो कुछ भी न होता
उधर तू न रोती, इधर मैं न रोता
लगी दिल को कोई नहीं जानता है
गुजरती है जिस पर वही जानता है

मुहब्बत की दुनिया बसायें तो कैसे
तुम्हें पास अपने बुलायें तो कैसे
मेरी बात सारा जहाँ जानता है
गुजरती है जिस पर वही जानता है





जिन्दगी पायी है

जिन्दगी पायी है यह हँसने हँसाने के लिये
मस्त रहने के लिये खेलने खाने के लिये

सारे दिन काम करें, रात में आराम करें
रंजोगम देख के ही दूर से सलाम करें

चन्द दिन साथ में रहने को जिन्दगी कहिये
साथ रहने की वजह रंजोगम सभी सहिये





न हम समझे, न तुम समझे

लगी दिल की बुरी होती, न तुम समझे न हम समझे
मुहब्बत में मिटे दोनों, न तुम समझे न हम समझे
गुलाबी हुस्न पर जब से हुए अरमान दीवाने
लपट में जल गये दोनों, न तुम समझे, न हम समझे

अगर अंजामे उल्फत का हमें पहले पता होता
न मुझसे यह खता होती, न दिल तुमको दिया होता
लिखा था क्या मुकद्दर में, न तुम समझे न हम समझे

मुहब्बत करने वालों की बड़ी लम्बी कहानी है
हमें अपनी जवानी आज से रो रो बितानी है
जमाने के इशारों को न तुम समझे, न हम समझे

लगी दिल की बुरी होती न तुम समझे, न हम समझे
मुहब्बत में मिटे दोनों न तुम समझे, न हम समझे





उधर तुम हो, इधर हम हैं

यह दुनिया है मुहब्बत की उधर तुम हो इधर हम हैं
उम्मीदों से भरा दिल है उधर तुम हो इधर हम हैं

न हम होते न तुम होते न यह दुनिया बसी होती
नदी के दो किनारों में न यह धारा बही होती
किनारे पर खड़े दोनों उधर तुम हो, इधर हम हैं
यह दुनिया है मुहब्बत की उधर तुम हो इधर हम हैं

बड़े अरमान हैं दिल में हैं मिलने की तमन्नायें
हमारे साथ आओ तुम मिलन के गीत हम गावें
न छूटे छोर दामन का उधर तुम हो, इधर हम हैं
यह दुनिया है मुहब्बत की उधर तुम हो इधर हम हैं

रहेंगे साथ ही दोनों लहर पर घर बनायेंगे
न तुम हमको भुलाओगे न हम तुमको भुलायेंगे
मुहब्बत की कसम तुमको उधर तुम हो इधर हम हैं
यह दुनिया है मुहब्बत की उधर तुम हो इधर हम हैं

नजर में इक नयी दुनिया जिगर में एक नयी धड़कन
मेरे जपवात की दुनिया से उठती एक नयी तड़पन
मिले हैं खूब हम दोनों उधर तुम हो इधर हम हैं
यह दुनिया है मुहब्बत की उधर तुम हो इधर हम हैं





गुलशन

गुलशन में रंगीले फूल खिले
कोयल दीवानी गाने लगी
एक दर्दभरा अफसाना वो
दुनिया को गा के सुनाने लगी
मस्तानी हवायें बहनें लगी
मौजों की खानी क्या कहने
फूलों के गहने पहने हुए
परियाँ भी आने जाने लगीं
एक कली पे भौरा मँडराया
नन्हा दिल उसका भरमाया
दोनों के दिलों में मिलने की
झाहिस तूफान उठाने लगी
दो कलियों में कुछ बात हुई
भौर की नीयत बदल गयी
कुम्हलाई कली, मुरझाई कली को-
वादे सबा सहलाने लगी
एक कली की आँख में आँसू थे
एक कली के गालों पे थी सुख्खी
एक कली के घर में मातम था
एक गीत खुशी के गाने लगी
इस बागे जहाँ की शाखों पर
अपनी अपनी किस्मत ले कर
गुल खिलते औ मुरझाते हैं
यह सोच कली पछताने लगी
जिनकी दुनिया आबाद हुई
मालिक उसको गुलजार करे





एक ठण्डी सी आह भरी उसने
दोनों की खैर मनाने लगी



नये संस्करण में शीघ्र प्रस्तुत, सम्पदा के वेबसाईट पर

लाहौर की नहर



मोती बी० ए०





कौम की अमानत

जिन्दगी अपनी नहीं कौम की अमानत है
कौम के काम न आये तो इस पै लानत है

जिन्दगी कुरबानियों का नाम है
सोने से घर में है आग लग गयी
आँख खोल देखो दुनिया बदल गयी
जीना मुश्किल है बहुत मरना आसान है
जिन्दगी कुरबानियों का नाम है

शोले हैं आसमान से बरस रहे
दुख के बादल तड़प रहे गरज रहे
पीछे पग भर भी हटना हराम है
जिन्दगी कुरबानियों का नाम है

बुजदिल वह कौन मौत देख जो डरे
मरन एकबार, बार बार जो मरे
डर डर कर मरने का कौन काम है
जिन्दगी कुरबानियों का नाम है

आगे बढ़ता जा बस काम किये जा
कौम की ही खातिर तू जान दिये जा
मौत से लड़ने वाला नौजवान है
जिन्दगी कुरबानियों का नाम है

दूसरों की खातिर जो जान लुटा दे
है वही इन्सान खुदी को जो मिटा दे
अमर शहीदों का अजब एक जहान है





जिन्दगी कुरबानियों का नाम है

हँसकर जो एक बार जहर भी पी ले
अख़्तियार उसको जी भर कर जी ले
उसका ही कायम नामोनिशान है
जिन्दगी कुरबानियों का नाम है

जिस्म को क्यामत क्यों ठेल रही है
मौत जिन्दगी से खेल खेल रही है
रुह के लिये तो खुदा का मकान है
जिन्दगी कुरबानियों का नाम है

जिन्दगी से मौत का यह खेल खेल लो
जिस्म पे आफत के झकोरों को झेल लो
सर पर साया करता आसमान है
जिन्दगी कुरबानियों का नाम है





तमन्ना कौन करे

(फिल्म 'महल' के निर्माण के समय श्री अशोक कुमार गांगुली, संगीतकार स्वर्गीय श्री खेमचन्द्र प्रकाश और पटकथा लेखक मरहूम श्री यस. यच. कण्ठे साहब के बीच यह नष्प मैंने सुनायी थी।)

महफिल से जनाजा उठ जाये
हस्ती की तमन्ना कौन करे
किशती को भँवर में चैन मिले
साहिल की तमन्ना कौन करे
महफिल से

मिल जाये नजात इस ठोकर से
फुरसत मिल जाये गर्दिश से
मुँह फेर के चल दें आलम से
रहने की तमन्ना कौन करे
महफिल से

मरकद पै शमाँ रोयी भी तो क्या
पहलू में अगर सोयी भी तो क्या
रो कर भी अगर खुश हो न सके
हँसने की तमन्ना कौन करे
महफिल से

हर गुल में है शबनम के कतरे
हर आँख में आँसू की बूँदें
हर लब पे है ग़म का अफसाना
कहने की तमन्ना कौन करे
महफिल से





यह दिल है नहीं इक मदफन है
अरमान है इसमें लाखों दफन
खोने से भी कुछ हासिल न हुवा
पाने की तमन्ना कौन करे
महफिल से

आबाद जो था बरबाद हुआ
फरियाद भी करना जुर्म हुआ
अशकों ने भी दामन छोड़ दिया
गाने की तमन्ना कौन करे
महफिल से

हर बूँद लहर में खो जाती
साहिल से हैं मौजें टकरातीं
बेचैन सा रहता बहरे फना
बहने की तमन्ना कौन करे
महफिल से

परवानों की महफिल में देखो
तारीकी औ मातम छाया हुआ
ऐ हुस्ने समाँ तेरे लव छू कर
जलने की तमन्ना कौन करे
महफिल से

चलने वालों का ताँता है
यह राह मगर कब खत्म हुई
बेकार की झूठी मंजिल पर-
चलने की तमन्ना कौन करे





महफिल से

इन खाक नशीनों को इतना
पामाल न कर ऐ चर्ख हसीं
इस टूटे हुए पैमाने से फिर
बनने की तमन्ना कौन करे
महफिल से

मयखाने में शोले भड़क उठे
औ कूत्र पै गुल सरसब्ज हुए
खुशबू भी न छोड़े बादे स्वा
पीने की तमन्ना कौन करे
महफिल से

मस्जिद से सदा इक जाती है
दम भर को तसल्ली दे जाती
जन्नत का भी दर जब खुल न सका
उठने की तमन्ना कौन करे
महफिल से

जब रोजे क़यामत बन्दानवाज
तारीख़ के पन्ने उलटेगा
वह रोजे अजल, वह वस्ल की रात
इसकी भी तमन्ना कौन करे
महफिल से

जब रख के जनाजा कन्धों पे
सब लोग चलेंगे रोते हुए

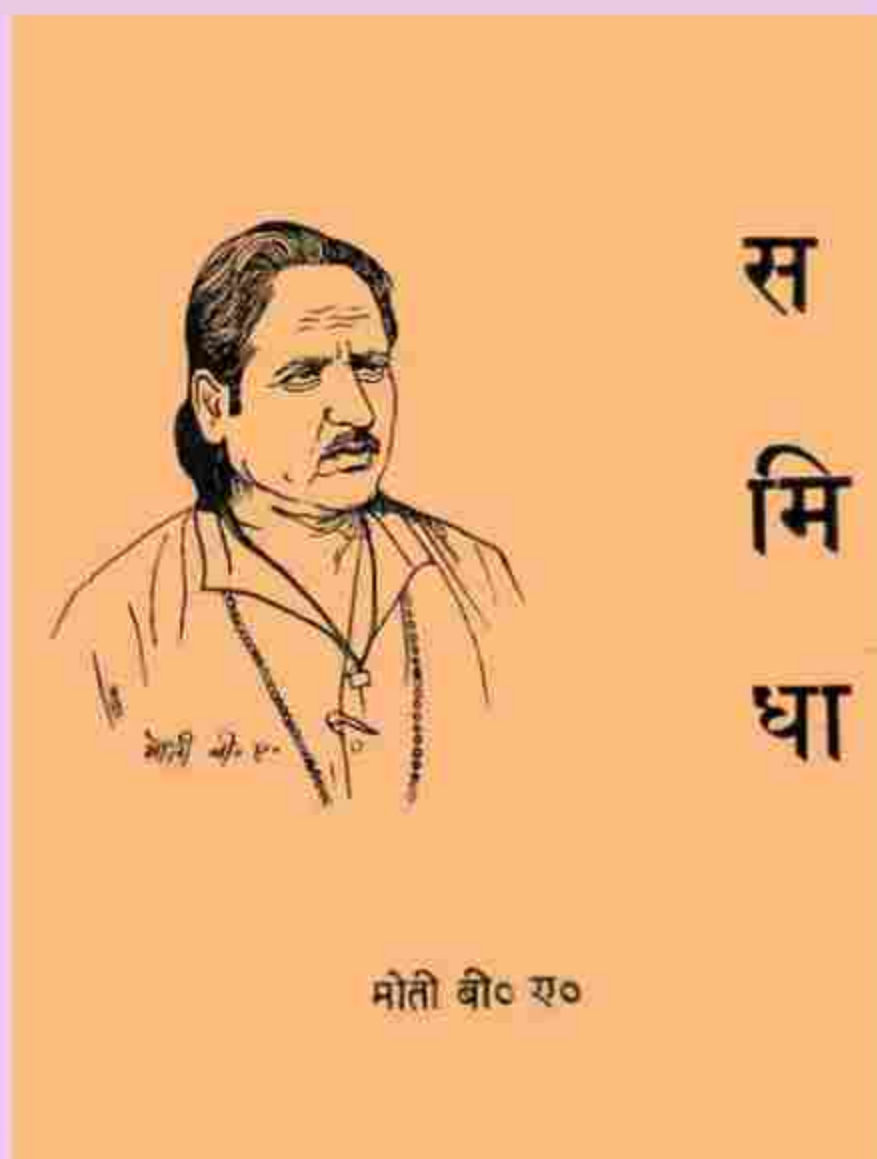




दुनिया को बता, शायर मोती
उस दिन की तमन्ना कौन करे
महफिल से



नये संस्करण में शीघ्र प्रस्तुत, सम्पदा के वेबसाइट पर





अलविदा

(वर्धा के साहित्य प्रेमी बन्धुओं की स्मृति में।)

हम चले लम्बे सफ़र को अलविदा ऐ दोस्तों
मौजे दरिया में बहो तुम अलविदा ऐ दोस्तों

डर नहीं तूफ़ान का हिम्मत हमारे साथ है
और सर पे कर रहा साया किसी का हाथ है
दिल में है शौके तमन्ना अलविदा ऐ दोस्तों
हम चले लम्बे सफ़र को

सामने लहरा रहा है एक दरिया पे सक्कू
खूँ जवानी का बदन में बह रहा बन कर जुनूँ
इस समय हम हैं नशे में अलविदा ऐ दोस्तों
हम चले लम्बे सफ़र को

सुर्ख रंग का एक सितारा सामने साहिल पे है
दिल ये कहता है कि शायद वो मेरी मंजिल पे है
अब नहीं हम रुक सकेंगे अलविदा ऐ दोस्तों
हम चले लम्बे सफ़र को

छोड़ कर जाना अगरचे सख्त मुश्किल काम है
क्या कहें, लाचारियों का नाम ही बदनाम है
इस समय लाचार हैं हम अलविदा ऐ दोस्तों
हम चले लम्बे सफ़र को

मुस्कराता वह सितारा और तुम हो रो रहे
किस मुहब्बत में पड़े बेजार इतने हो रहे





फेर लो पुरनम निगाहें, अलविदा ऐ दोस्तों
हम चले लम्बे सफर को

दिल की बस्ती में तुम्हारे था हमारा कारवाँ
चन्द दिन गुजरे अमन से, कारवाँ फिर है खाँ
दर्द लेकर जा रहे हैं, अलविदा ऐ दोस्तों
हम चले लम्बे सफर को

हम क़िशिश लेकर तुम्हारी सूये मंजिल चल पड़े
खोल कर दिल दो दुआयें बुत बनें क्यों हो खड़े
यह दुआ दौलत हमारी, अलविदा ऐ दोस्तों
हम चले लम्बे सफर को

दिल लगा कर भूल जाना यह नहीं आसान है
जानेमन, यह जिन्दगी इस कौल पर कुरबान है
रास्ते की तुम शमाँ हो, अलविदा ऐ दोस्तों
हम चले लम्बे सफर को

जब कभी आना तुम्हें हो राह पर सूये अदम
मुस्कराते हाथ फैलाये हुए आयेंगे हम
उस समय मत भूल जाना, अलविदा ऐ दोस्तों
हम चले लम्बे सफर को

गलतियाँ जो हो गयी हों माफ़ कर देना उन्हें
हम दुआयें दे रहे हैं राहे मंजिल से तुम्हें
सर झुकाये जा रहे हैं अलविदा ऐ दोस्तों
हम चले लम्बे सफर को





एक और कदम

एक और कदम
आखिरी कदम

मंजिल अब कुछ भी दूर नहीं
हम भी इतने मजबूर नहीं
साथियों, उठाओ आज कदम-
एक और कदम
आखिरी कदम

दिल से गदारी दूर हुई
बन्धन की कड़ियाँ चूर हुई
मन में स्वतन्त्रता दीप जला
अँधियारी देखो दूर हुई
सामने चमकता आजादी का
सिंहासन चमचम चमचम
एक और कदम
आखिरी कदम

जिस ताक़त से हम खड़े रहे
उस ताक़त से ही मंजिल पर
पल भर में ही पहुँचेंगे हम
एक और कदम
आखिरी कदम

इक नयी रोशनी आज जगी
नस नस में आग नयी सुलगी
हम कोटि कोटि भारत वासी





सब की आशा की कली खिली
बस इसी आग से हम स्वदेश में -
सुख के दिये जलायेंगे
सारी दुनिया हो चकाचौंध
हम ऐसी ज्योति जगायेंगे
हम एक खून
हम एक जान
हिन्दू हों या हों मुसलमान
दुनिया में है हम किससे कम
एक और कदम
आखिरी कदम

हम जेल गये, कोड़े खाये
पर नहीं जरा भी घबराये
बस एक आन पर डटे रहे
माता का दूध न शरमाये
हम लोगों की कुरबानी से
फिर खिलें जमीं पर फूल नये
बस इसीलिए लाठी खायी
और फाँसी पर भी झूल गये
हम आगे बढ़ते गये
और,
दुश्मन ने फेंके बम पर बम
एक और कदम
आखिरी कदम

भारत माता की गोदी में
कितने परदेसी सुख पाये





अपने बच्चे जैसे माँ ने
सबके ही सुख दुख अपनाये
वह माता, दुनिया की माता
दिन काट रही हैरानी के
घबकर में पड़ी हुई है माँ
शैतानों की शैतानी के
बस एक और झटके से ही
आखिरी बन्द भी टूटेगा
अब एक और ठोकर से ही
यह घड़ा पाप का फूटेगा
दुनिया में अमन चैन फैले
घर घर में सुख के दिये जलें
हम वह दिन फिर से लायेंगे
हम आगे बढ़ते जायेंगे
जब तक हम में है-
दम में दम
एक और कदम
आखिरी कदम

1946, बम्बई





आँसुवों का असर

न रो, आँसुवों का असर बेअसर है
इधर भी कहर है, उधर भी कहर है
जिधर देखिये बस कहर ही कहर है
न रो, आँसुवों का असर बेअसर है

चली गम की आँधी मुसीबत जदों पर
तरस कौन खाये तेरे आँसुवों पर
न खौफे खुदा है, किसी का न डर है
न रो, आँसुवों का असर बेअसर है

जले या बुझे रोशनी जिन्दगी की
न परवा यहाँ पर किसी को किसी की
तुम्हारा मसीहा बड़ा बे खबर है
न रो, आँसुवों का असर बेअसर है

हैं उलफत के मोरे ये जलते सितारे
बेचारे सभी अपनी किस्मत के मोरे
शराबे मुहब्बत भी मीठा जहर है
न रो, आँसुवों का असर बेअसर है

जबाँ पर हैं ताले, ज़िगर में हैं छाले
चुभा तीर दिल में ये कैसे निकालें
कभी चैन से सो न पाता बशर है
न रो, आँसुवों का असर बेअसर है

मिटी जिन्दगानी लुटा आशियाना





चमन में न बुलबुल सुना यह फसाना
तुम्हारे लिये अब न घर है, न दर है
न रो, आँसुओं का असर बेअसर है

गुजरते हुवे दिन गुजर जायेंगे बस
दरख्तों के पत्ते भी झर जायेंगे बस
बहर में लहर का यही रह गुजर है
न रो, आँसुओं का असर बेअसर है

किसे दाग दिल का दिखाने चले तुम
किसे राज दिल का बताने चले तुम
इन्हीं दास्तानों से कायम शहर है
न रो, आँसुओं का असर बेअसर है

1945, लाहौर





इधर से बादे सबा

इधर से बादे सबा बह गयी

जगी थी रात बस जगी ही थी
लगी थी आँख बस लगी ही थी
पगी थी पीर पोर पोर बस पगी ही थी
उठा के बाँह से मुझको
न जाने कान में क्या कह गयी
इधर से बादे सबा बह गयी

झलक थी एक दिखा के चली गयी
फलक से नूर गिरा के चली गयी
पलक से देह में सिहरन जगा गयी
चली गयी व्यथा देकर दुसह गयी
इधर से बादे सबा बह गयी

तड़प थी एक जगा के चली गयी
कसक थी एक चुभा के चली गयी
लहर थी एक उठा के चली गयी
सजी जो पाँत मोतियों की-
रात ढह गयी
इधर से बादे सबा बह गयी

सुना के कान में क्या कह रहा कहीं कोई
छिपा के दर्द सुनो से रहा कहीं कोई
बिठा के गोद में समझा रहा कहीं कोई
वो जा रही थी उधर से





वहाँ ठहर गयी
इधर से बादे सवा बह गयी

कसक कसक के आह वाद एक आती है
सिसक सिसक एक पीर गीत गाती है
फफक फफक के बात एक उमर आती है
सुना सका न बात मन की-
मन में रह गयी
इधर से बादे सवा बह गयी

जहर की बूंद एक थी पिला गयी
कहर थी एक वहाँ पर गिरा गयी
बहर पै मौत के मुझको बिठा गयी
किसी की रुह बन के जिन्दगी-
सुबह सुबह गयी
इधर से बादे सवा बह गयी

गोरखपुर, 1950





चादर में मुँह को तोप

चादर में मुँह को तोप-ढाँप सो रहे हैं हम
अब क्या कोई समझेगा कि यूँ रो रहे हैं हम

किस बात की कमी हमें, क्या चाहिए अभी
जो बेखुदी में खुद परस्त हो रहे हैं हम

चाहा कि आसमाँ को जमीं पर उतार लें
इक बोझ जिन्दगी है मगर ढो रहे हैं हम

थी ख्वाहिशें बुलन्द बुलन्दी पै थे कभी
हम कारवाँ न मीरे सफर गो रहे हैं हम

हम देख रहे हैं कि सभी मुक्तलाए गम
काँटों की फसल काट और बो रहे हैं हम

जून, 1989





मर्सिया

(पण्डित छांगुर प्रसाद त्रिपाठी रहें अदम पर हैं। हम खुशानसीब हैं कि राहें अदम पर दूर तक पहुँचें हुए। इस आला मुसाफिर को हम अभी भी देख सुन सकते हैं। उनको देखकर आने के बाद जो जजबात दिल में उठे, उन्हें अक्सर कर दिया गया है। साँसें उनकी आखिरी हैं, मर्सिया ख्याली है।)

उम्रेदराज माँग के लाये थे जो अजीम देकर दुआ
देकर दुआ जहान को वे आज जा रहे

सोये हैं कितनी शान से गोया फिकर नहीं
सब लोग रो रहे वो उधर मुस्करा रहे

ताजीस्त फरेबों सितम जो झेलते रहे
अब आज फना का कमाल आजमा रहे

वारण्टे हुकूमत पे गिरफ्तार हुए जो
वो आज भी मुचलका जमानत न पा रहे

हमदर्द हाथ मलते हुए पासे रो रहे
वो मस्त इस कदर न नजर तक उठा रहे

गाँवों की सभायें वो सदायें आवाम की
नारे भी अब न नींद से उनको जगा रहे

'नाटक सुदेसिया' औ' वो 'आल्हा स्वराज्य' का
उनको आदाब अर्ज-बा-अदब बजा रहे

लूटी गयी दूकान औ' फूँकी गयी किताब
वो जिन्दगी लुटा चुके, मैयत लुटा रहे





वह मादरे जवान जो मशहूर भोजपुरी
रोती है संगदिल जवाँ-ठोकर लगा रहे

कहती है कि तू जिसके लिये कैद था हुआ
हालत पै उसको छोड़ तू बेकैफ जा रहे

बरहज का गुलिस्तान जो गुलजार किये था
है क्या ख़ता चमन जो यह बीराँ बना रहे

माना कि सियासत का मुकदमा जो गये हार
तहजीबो तमदुन का फरिश्ता सदा रहे

छाँगुर की शान में गुहर नाचीज ही रहे
वो गा रहे हैं मर्सिया, मातम मना रहे

06.10.72, बरहज, देवरिया





कताते मयकदा, दीगर कतात

शराब पीते हैं हरदम नशे में रहते हैं
खुदा का शुक्र तहे दिल से अदा करते हैं
नहीं है कैद उनकी शान में यों झुकने की
हम तो झुक झुक के हमेशा सलाम करते हैं

क्या तौर मयकदा, तुझे मालूम न एरिन्द,
हुस्नो शबाब, साकिया, मयखाने से तोंबा

खुदा ने हुस्न दिया अपनी इबादत के लिये
और तू है कि मयकदे में जा छिपा साकी

साकी से मुहब्बत है कि मयखाने से
रिन्दों से पूछ क्या है हकीकत शराब की

मयखाना हो, मय भी हो, साकी भी हो अगर
रिन्दों के बिना इनकी सकूनत जरा पूछो

मयखाना हो, साकी हो, अगर हो नहीं शराब
रोजगार मुहब्बत बताओ कैसे चलेगा

मयखाना हो, मय भी हो, साकी न हो अगर
रिन्दाने जहाँ दौर-जाम खुद चलायेगा

कुछ मनचले साकी पै दिलो-जान से निसार
गोया शराब से है उन्हें वास्ता नहीं





साकी का क्या बजूद है रिन्दों की नजर में
साकी तो वो पीते नहीं, पीते शराब हैं
बेशक शराब साकिया हँस हँस के पिलाये
साकी का हुस्न और है, हुस्ने शराब और

साकी हो बगलगीर तो लमहा भी बहुत है
गर हो शराब सामने दुनिया भी कुछ नहीं

नशे में चूर हो गया है यह जाहिद इतना
खुदा को देखता नहीं है वह मयखाने में

दरअसल रिन्द वो जिसका नशे पै हो काबू
शराब पी के वह सिजदा खुदा की करता है

माना शराब शायरी में फिलसफा बुलन्द
लेकिन कुरान क्यों उसे हराम मानता

उम्दा शराब हो तो दे दे कुरान फतवा
लेकिन शराब उम्दा, लाहौल बिला कूबत

पढ़ी नमाज, खुदा से न मुलाकात हुई
शराब पी, चहार सूं खुदा नजर आया

नमाज पढ़ के मयकदे में झट हुआ दाखिल
दूर गोया नमाजखाना है मयखाने से

तू जितने शौक से पीता है गर नमाज पढ़े
रिन्द, ले मान यह इलहाम उसी दम हो जाय





जाहिद के साथ हम जो गये मयकदे एक रोज
माहौल देख कर ही तबीयत मचल गयी

साकी वो खूबसूरत, लवरेज जाम था
जाहिद, तू जा हमारी तो तबीयत बदल गयी

मये उल्फत में होश गुम हुआ, सरूर चढ़ा
पाक दुनिया में खुदा की पहुँच गये यकदम

मये शायर है ये बाजार में नहीं बिकती
बदस्ते नाज खुद बखुद खुदा मियाँ पीते

मये उल्फत और मये शायरी न दो समझो
दोनों जीते हैं फकत एक हसीन सूरत पे

कतरा के चला मसजिद मयकश यह सोचकर
खुदा के सामने जम के जाम पीयेंगे

शराब यूँ खुदा ने पी कि बेनिशान हुआ
निशान रख के जो पीयें शराब तानत है

खुदा को भूलने को जाम लगाया लब से
नशे में हाथ, रुबरु खुदा नजर आया

नुक्ता नजर शराब हो एतराज नहीं मुतलक
जैसा चश्मा हो वैसा ही दिखायी देगा

अब तक लगा आपको चश्का शराब का
उखड़ा हुआ मिजाज इसलिये है आपका





शराब पी के नशे में यहीं पड़ जायेंगे
शराबखाना क्या हम लाद के ले जायेंगे
नजर साकी से चार हो जाये
बादाकश अर्शे बार हो जाये
फरेबे जिन्दगी अहवाल कह के क्या होगा
शराबखाना ही मेरी मजार हो जाये

शराब थोड़ी हो सेहत के लिये मौजू है
शराब ज्यादा अगर हो तो रुह अफ्रजा है
जनाब ढालिये शराब कोई हर्ज नहीं
शराब पीने का अन्जाम बहुत अच्छा है

शराब नुक्ताए नजर है तख्तियुल के लिये
शराब मुँह से नहीं रु से लगाई जाती

कुदरत है तख्तियुल में, तसौबर में है साकी
नुक्ता नजर शराब है, अब क्या रहा बाकी

यह मुसलसल है तरक्की शराबखारों की
मयखाना, मयकदे से वो जन्नत पहुँचे

जिन्दगी दर्द सर अलामत है
शराबखाना सफाखानये सदाकत है
न गया मयकदे में सुन के बात वाइज की
सर्द रग रग है कुछ हरात है

शराबे शौक है नहीं ये एक मजबूरी है
खुदा मियाँ और खुदाई से बड़ी दूरी है





साँस का दौर है, दुनिया शराबखाना है
जाम बढ़ने और उतरने का इक पैमाना है

हूर गिल्में मिलेंगे जन्नत में
अपने हाथों खुदा पिलायेंगे
कौन जायेगा यार दोजख में
अब तो हम मयकदे में जायेंगे

मयखानये चमन है खुला रोजे अजल से
पैमानये गुलशन कभी खाली नहीं हुआ

उनकी खसूसियत पे जरा गौर कीजिये
पीते हैं दिल की सारी हसरत निकाल के

कुछ गुल ने पिया कुछ गुलची ने
भँवरों ने तो रिश्ता जोड़ लिया
खाली जो सुराही पायी तो-
कुदरत ने पियाला तोड़ दिया

पीने आये हैं जम के पीयेंगे
जैसे रहना है यहाँ रह लेंगे
रोजे महशर से क्या डराते हो
तुमभी कहलेना, हमभी कह लेंगे

चमन में वूये मय चहार सूं से आती है
लव पे कलियों के जो खुशबू है, नशा लाती है

जब भी मैं मयकदे को जाता हूँ
रोज जाहिद को वहीं पाता हूँ





चाहता हूँ निकल चलूँ बच के
जितना कतराता हूँ, घबराता हूँ

होश में रह के बात करता हूँ
इनको उनको सलाम करता हूँ
कभी फटकार और कभी गाली
हजार लाख बार सुनता हूँ

पी के जब मयकदे से आता हूँ
पूरे माहौल पर छा जाता हूँ
किसकी हिम्मत जो मुझसे बात करे
सिर्फ कानून से घबराता हूँ

कुछ न तूती की चली जब नक्काखाने में
आसमाँ सर पै उठा के चली मयखाने में

खामोशिये अजीम से यूँ फायदा उठा मत
जो रास्ता न देखा वह रास्ता दिखा मत
तूँ खौफ जिससे खाये वह साँस में हमारी
पीने और पिलाने का तू कायदा बता मत

साकी, शराब जाम, मयकदा है किसलिये
क्यों हुस्न में खुदा न देख पा रहे हो तुम

घबरा के पी गये कुछ थरा के पी गये
औं हम, शराब मयकदे में आ के पी गये

जिनके दिलो दिमाग पै ताँरी कुराँ शरीफ





वो मयक़दे में किस लिये ले आयेंग तशरीफ़

वो लज्जते शराब क्या जानूँ
मैं आपको जनाब क्या जानूँ
इक गरीबुल बतन हूँ मेहनत कश
हुस्नो साकी, शराब, क्या जानूँ
शराबे जीस्त है सब पीते हैं
जब तलक साँस चले जीते हैं

कौन आया है मयक़दे में आज
नाज साकी का बेहिसाब है आज
शेख़ जाहिद के साथ बाइज भी
लवों पै जाम है, नहीं आवाज

अब उसी की है तमन्ना और वही बाकी है
जाम लबरेज लिये सामने ही साकी है

बात है यह न शरम खाने की
राह वह है शराबखाने की
हाथ काँपे न कहीं छलके जाम
शान जाये नहीं दीवाने की

जरा सी पी लिये औ' आ गये नशे में झट
तुम्हारे वास्ते बेहतर नमाजखाना है
होश में आना याँ गुनाह होशियारी है
जनाब, जाइये मस्जिद में, यह मयखाना है

शराबखाने के मालिक को गौर से देखो





वह भी पीता है मगर होश बना रहता है
रिन्द की जात को बदनाम किया है तूने
मयकदा देख के तुमको सरूर चढ़ता है

आज हम मयकदे गये न कुछ भी ढाली है
नशा उतर गया और रह गयी खुमारी है

एक ही जाम से हैं पी रहे कितने देखो
एक ही साकिया सबको है पिलाता जाये
एक ही आब के मोती हैं ये पीने वाले
सरूर एक सा चढ़ता और उतरता जाये

हम न जायेंगे उनकी महफिल में
एक ही जाम से साकी वहाँ पिलाता है
मुख्तलिफ राह से चलकर मिलें तो मिलना है
वहाँ तो एक जगह खन्दक बनाया जाता है

हुस्न वालों ने लिया लूट क्या रहा बाकी
आतिशे कल्ब को थोड़ी शराब दे साकी

हसीनों की महफिल में दिल फेंक आया
गया मयकदा सोजे दिल सेंक आया

सोजे दिल है, शराब है फकत दवा इसकी
तुतमलंगे से कहीं घाव यह अच्छा होगा

पीके दीवाना गर हुआ तो क्या बुरा मोती





बिना पीये भी तो दीवाने बहुत होते हैं

शराब पीते ऐ वाइज, तो बहुत बेहतर था
तुम्हारी जोश की बातों में हकीकत होती

लवों तक बात आई है, कहो तो आज कह डालें
तबियत तुम पे आई है, कहो तो आज कह डालें

तुम्हारे दिल की दुनिया को नजर में ले के जाऊंगा
करोगे याद कुछ ऐसी निशानी दे के जाऊंगा
यह दिल पहले ही से मशकूर हुआ जाता है
शराब ले के साकिया तो नहीं आता है

बात अब रह न गयी राजे दिल छिपाने की
गमक उठी हैं दीवालें शराबखाने की

दलील ले के तू आखिर यहाँ भी आ पहुँचा
यह मयकदा न हो गोया तेरी नवाबी है

अब न जिल्लत है कोई और न परीशानी है
आसमानी सरूर है, खुमार धनी है

जिस तगाफुल से शुरुआत हुई पीने की
बन गयी कैपिफयत वही हमारे जीने की

जब न दीदार का मंजर कहीं नजर आया
होके लाचार मयकदे को आजमाया है





गर हुस्ने इन्तजाम देखने का शौक हो
एक रोज मयकदे में खुद तशरीफ लाइये
इन्सान और इन्सानियत लें देख एक साथ
आबेहयात पी के फर्क भूल जाइये

आबेहयात पी के हम मंजिल से चले थे
दुनिया की अलामत में खामखाह खो गये
हम मयकदे के दर गुजर मंजिल पहुँच गये
आबे हयात पी के बस चुपचाप सो गये

साकी तुम्हारे जाम में इतनी है कम शराब
बदकिस्मती हमारी यहाँ तक पहुँच गयी
तुमसे जो तबीयत यह बहल जाय तो अच्छा
वरना, सरूर की तो कैफियत बिगड़ गयी
अय खुदा, तूने यह शराब क्या बनाई है
इसी के दम पे फकत चल रही खुदाई है
तुमसे किस हौसले से बात करें, ऐ बाइज
तुमसे ही दीन और ईमान की रुसवाई है

आँख से शोलाए गुस्सा है बरसता हरदम
हमेशा अर्श पे तुम चढ़ के बात करते हो
खुदी के चश्मे से हो देखते मुहब्बत को
छिप के परदे में खुराफात क्या न करते हो

साकी, शराब रिन्द को ही मयकदा समझ
साकी तो पफकत दोनों को लाता है रुबस

लवों पे दम हो, तबस्सुम नुकीली नजरों में





यही वो हुस्न है कुरबान दिलों जाँ जिस पै

उनसे आया न गया हम भी वहाँ जा न सके
दर्द से ज्यादा मुहब्बत का मथा पा न सके

दीदाए यार की हसरत न रह गयी दिल में
दिल लगाने का मजा हमने यही पाया है

तुम बेनकाब आवो चाहे बानकाब आवो
मैं यह भी नहीं कहता तुम मयकदे में आवो
मेरी यह इल्लिजा है आ जावो तख्मैयुल में
जितना भी पी सकूँ मय, उतना मुझे पिलावो

तुम तख्मैयुल में जो आ जावोगे उरियाँ हो के
शीशाए चश्म तड़ाके से टूट जायेंगे
एक नयी दीद से देखेंगे तुम्हारा जलवा
और उसी दम तेरे जल्वे में डूब जायेंगे
ऐसी लगन लगी कि मुलाकात हो गयी
जो थी कयास के परे वह बात हो गयी
तनहाइयों में जब भी जरूरत हो बुला लूँ
दिल में हसीन दुनिया आबाद हो गयी

दीदार तसौवर में
तख्मैयुल में हो बसाल
मगलूब हो बुतखाना
काबा हो जुल जलाल

खुदा ने जिन्दगी के साथ ही मुहब्बत दी





और मुहब्बत दी माशूक बनाने के लिये
हुस्न माशूक को दिया तो दिया बेपरवा
चश्मे पुरनम दिया मशकूर बनाने के लिये

हम इशारे के हैं मुन्तजिर
चाहते जो हुकुम कीजिये
अपने बन्दे को पहचानिये
मत उसे बेभरम कीजिये

शौक से दर्द दिल का यह पी लीजिये
और जमाने की नषरों में आ जाइये
रोशनी ले के सूरज से चमके हैं जो
बन के महताब दुनिया पे छा जाइये

यूँ फिजाँ में खिजाओं के पलते हुए
ग्वाब में हम बहारों के जीते रहे
एक मुद्दत से हसरत चमन की लिये
चाक दामन गरेबाँ का सीते रहे

एक नयी बात कहने को हम आ गये
तुम नये हो नहीं हम पुराने नहीं
गर नया कुछ यही, हम तुम्हें, तुम हमें
एक को दूसरा सिर्फ माने नहीं

खैरमक़दम है मुबारक हों आप मुतवातिर
हम तो इक आस के पंछी हैं, उड़ा करते हैं
आपके आने से कुछ दम जरूर मिलता है
हम इसी दम के सहारे तो जिया करते हैं





सैर को एकदिन आप आ जाइए
दिल का गुलशन हमारा ये गुलजार है
शाख है झूमती, फूल हैं नाचते
एक बुलबुल तरनुम से बेजार है

सैर गुलशन से हमको है क्या वास्ता
हमको तेरा न बागे अरम चाहिये
सारी खिलकृत चमन में बदल जायेगी
ऐ सनम, तेरा नजरे करम चाहिये

जब से देखा तुम्हें इतना बेखुद हुआ
दर्द बढ़ता गया तेरे इनकार में
बेवफाई का तेरी यूँ मशकूर हूँ
वरना क्या था मजा तेरे इकरार में

हसीन दोस्त मेरे बाकई हसीन हो
स्वाहिशों के लिये तो जैसे कुढ़कमीन हो
गरीब काश्तकार मर न जायँ तब कैसे
लगान दें और बिला जोत की जमीन हो
दर्द तेरे लिये मेरा तुमसे हसीं
मैंने पाला है इसको बड़े नाज से
मौज से जिन्दगी मेरी कट जायेगी
ऐ सनम, हुस्न के तेरे अन्दाज से

कारवाँ हसरतों का बढ़ा जा रहा
मैंने पूछा यह आखिर कहाँ जायेगा
आबे जम जम में करके वजू शौक से
क्या हसीनों के दर पै चला आयेगा





हुस्न पर आफरीं एक जमाने से हम
होश उड़ता गया, दर्द बढ़ता गया
हुस्न दुनिया में कायम का कायम रहा
कारवाँ कोहकन में उतरता गया



मुद्दतो का इन्तजार, समाप्त । हम लाए है मीडिया बन्धुओं के समग्र प्रयास
का साकार संकलन, “समाचार पत्रों की नजरों में मोती बीए” भाग-01

1932 से संकलित समाचारों की प्रथम किशोरा

समाचार पत्रों की नजरों में मोती बी.ए.



समाचार पत्रों द्वारा छापे गये अब तक के समाचारों का संकलन

संकलनकर्ता -

श्रीजनीकुमार उपाध्याय

web-www.sampadanews14.blogspot.com

